वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 72 गुरुवार 20 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

कैमरे की नजर से बोल उठा उदयपुर का जनजीवन, विरासत और प्रकृति

100 से अधिक छायाचित्रों में सजी संवेदनाओं की दुनिया, दृश्यकला विभाग की प्रदर्शनी बनी आकर्षण

उदयपुर. शाबाश इंडिया

झीलों पर उतरती सांझ, ऐतिहासिक इमारतों की स्थापत्य गरिमा, गांव की मिट्टी से जुड़ी सहज जिंदगी, लोक संस्कृति के जीवंत रंग और प्रकृति के अनछुए रूप–मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग में आयोजित त्रिदिवसीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी में ये सभी दृश्य कैमरे के फ्रेम से निकलकर मानो दर्शकों से संवाद करते नजर आए। विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर सजी इस प्रदर्शनी में विभाग के विद्यार्थियों द्वारा खींचे गए 100 से अधिक चयनित छायाचित्र प्रदर्शित किए गए हैं। हर तस्वीर में केवल दृश्य नहीं, बल्कि उसे देखने वाली युवा दृष्टि, संवेदना और रचनात्मकता भी स्पष्ट रूप से दिखाई दी। ऐतिहासिक धरोहरों से लेकर ग्रामीण जनजीवन की सादगी, लोक परंपराओं की आत्मीयता और प्रकृति के सहज सौंदर्य तक, प्रदर्शनी ने उदयपुर अंचल की बहुरंगी पहचान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट राकेश शर्मा ''राजदीप'' के छायाचित्र रहे। उनके फ्रेमों में उदयपुर शहर के बदलते स्वरूप के साथ ग्रामीण जीवन की सहजता, श्रम, संवेदना और मानवीय रिश्तों की खूबसूरत झलक दिखाई दी। इन छवियों ने विद्यार्थियों और कला प्रेमियों को फोटोग्राफी की सामाजिक सरोकारों से जुड़ी शक्ति से भी परिचित कराया। कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने अपने संदेश में कहा कि फोटोग्राफी नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति, विरासत और परिवेश को नए नजरिये से समझने का अवसर देती है। आट्र्स कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन उनके भीतर दृश्यबोध और कलात्मक दृष्टि को विकसित करते हैं। विभागाध्यक्ष डॉ. धर्मवीर वशिष्ठ ने प्रदर्शनी को विभाग की सृजनात्मक गतिविधियों का महत्वपूर्ण पड़ाव बताते हुए इसे निरंतर जारी रखने की बात कही। मुख्य अतिथि राकेश शर्मा 'राजदीप' ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए फोटोग्राफी के तकनीकी पक्ष, प्रकाश संयोजन, विषय चयन, समय की समझ, दृश्यबोध और व्यावसायिक संभावनाओं पर उपयोगी जानकारी साझा की। प्रतियोगिता में कोईना दवे प्रथम, ललित डांगी द्वितीय तथा अनन्या शर्मा और हर्षिता गौड़ तृतीय रहीं। हितेश प्रजापत, रेणु जैन और भगवती को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रदर्शनी 21 अगस्त तक जारी रहेगी। कार्यक्रम में डॉ. शाहिद परवेज, डॉ. दीपिका माली, डॉ. गौरव शर्मा, डॉ. यामिनी शर्मा,

प्रो. रघुनाथ शर्मा, यज्ञाचार्य सुरेश पालीवाल, डॉ. मनीष, डॉ. गिरिराज, प्रभुलाल, डॉ. मयंक शर्मा, शर्मिला राठौर सहित संकाय सदस्य, विद्यार्थी और कला प्रेमी उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : यौवंतराज माहेश्वरी

साधना के 22 वर्ष: तपस्या की प्रतिमूर्ति मुनि श्री विशाल सागर महाराज

आत्मध्यान के सागर एवं काय-क्लेश के जीवंत साधक जयपुर गौरव स्थविर मुनि श्री विशाल सागर महाराज

72 दिन की चल रही उनोदर तप साधना, 1 अक्टूबर को होगा अन्न आहार पारणा

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर के लिए वर्ष 2026 का वषायोग निःसंदेह एक आध्यात्मिक सौभाग्य है। पंचम काल की विषम परिस्थितियों में भी चतुर्थ कालीन साधना की स्मृति कराने वाली कठोर तपस्या, त्याग, संयम, आत्मध्यान और काय-क्लेश की साधना करने वाले जयपुर गौरव स्थविर मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज इस वर्ष श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, चित्रकूट कॉलोनी, सांगानेर में अपने दीक्षा गुरु परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज के ससंघ चातुर्मास में साधना की नई ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहे हैं। मुनिश्री का जीवन केवल त्याग और तपस्या की कथा नहीं है, बल्कि आत्मा की ओर निरंतर लौटते हुए एक साधक की जीवंत आध्यात्मिक यात्रा है।

प्रारंभिक जीवन : संस्कारों की उर्वर भूमि

जयपुर के गौरव दिगम्बर संत एवं तपस्वी मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज का जन्म 10 जून 1973 को राजस्थान की राजधानी जयपुर के सांगा का रास्ता स्थित सांगा भवन में श्रीमती पदमा देवी की पावन कोख से हुआ। उनके पिता श्री माणकचन्द जैन पाण्ड्या धार्मिक प्रवृत्ति एवं संस्कारवान व्यक्ति थे। श्री माणकचन्द जी की पांच संतानों—सुनील, अनिल, सुधीर, सुनीता एवं अनिता में तीसरे क्रम के सुधीर जैन ही आगे चलकर जैन समाज के गौरव और तपस्वी संत मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज के रूप में विख्यात हुए। भैया सुधीर की प्रारंभिक शिक्षा बाल शिक्षा मंदिर, महावीर पार्क स्कूल, श्री दिगम्बर जैन महावीर स्कूल तथा अग्रवाल स्कूल, जयपुर में हुई। इसके बाद उन्होंने गुप्ता कॉलेज एवं जयपुर कॉलेज में भी अध्ययन किया। सन् 1998 में फाइनेंस एवं चिटफंड कंपनियों में हुई धोखाधड़ी के कारण उन्हें आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा। संसार की अस्थिरता और भौतिक उपलब्धियों की क्षणभंगुरता का यह अनुभव उनके जीवन में वैराग्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

वैराग्य की प्रथम किरण : तप से आत्मजागरण

सन् 1999 में दशलक्षण पर्व के अवसर पर अलवर के जैन भवन में आयोजित श्रावक संस्कार शिविर में वे सम्मिलित हुए। मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से उन्होंने पहली बार दशलक्षण पर्व में दस उपवास किए। श्री महावीर जी में महावीर जयंती के पावन अवसर पर आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, पोरसा वाले, से उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत का नियम धारण किया। इसके पश्चात सिद्धार्थ नगर, जयपुर स्थित श्री महावीर जिनालय में नियमित अभिषेक-पूजन तथा नगर में पधारने वाले साधु-संतों की सेवा में सक्रिय रहने लगे।

साधना का शैशव: मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी

आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ते हुए 22 अगस्त 2004 को जौहरी बाजार, जयपुर में वषायोग कर रहे मुनि श्री विशद सागर जी महाराज से उन्होंने सप्तम प्रतिमा के नियम अंगीकार किए। यह उनके सांसारिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन की

ओर निर्णायक प्रस्थान था। यह केवल एक व्रत का अंगीकार नहीं, बल्कि आत्मा की पुकार को स्वीकार कर मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी पर दृढ़तापूर्वक आरोहण था।

नवदीक्षित आचार्य से दीक्षा: एक अद्भुत संयोग

13 फरवरी 2005 का दिन उनके जीवन का ऐतिहासिक दिवस बना। मालपुरा की पावन धरा पर आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के आशीर्वाद से मुनि श्री विशद सागर जी महाराज आचार्य पद के संस्कारों से संस्कारित हुए। इसी शुभ अवसर पर नवदीक्षित आचार्य परमेष्ठी श्री विशद सागर जी महाराज ने जयपुर के सुधीर जैन को मुनि दीक्षा प्रदान कर उन्हें ''मुनि श्री विशाल सागर जी'' नाम से अलंकृत किया। उनका प्रथम चातुर्मास निवाई में हुआ और यहीं से प्रारंभ हुई उनकी कठोर, अनुशासित एवं निरंतर साधनामय मुनि-जीवन की यात्रा।

विशाल सागर : नाम में भी साधना, साधना में भी विशालता

'विशाल सागर'—नाम ही जैसे उनके जीवन की साधना का परिचायक है। जिस प्रकार सागर अपनी गहराई में अनंत रहस्यों को समेटे रहता है, उसी प्रकार मुनिश्री का साधनामय जीवन तप की गहराई, आत्मध्यान की गंभीरता और संयम की विशालता को अपने भीतर समेटे हुए है।

सम्मेद शिखरजी : साधना का शिखर

परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज के आशीर्वाद से मुनिश्री ने सम्मेद शिखरजी पर्वत की 25 टोंकों के प्रत्येक कूट की लगातार 1008-1008 वंदना की। यह साधना अत्यंत दुर्लभ और विलक्षण मानी जाती है। 3 मई 2022 से 8 मार्च 2023 तक उन्होंने सम्मेद शिखरजी पर्वत की 306 बार चरण-वंदना की। साधना की यह निरंतरता उनके अटूट आत्मबल, अदम्य श्रद्धा और गुरु आज्ञा के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रमाण है। मुनिश्री ने सम्मेद शिखरजी पर्वत की पांच बार पद-परिक्रमा भी की। सम्मेद शिखरजी के लगभग दस माह के प्रवास में उन्होंने 108 व्रत-उपवास के माध्यम से अपनी साधना को और अधिक प्रखर बनाया। जनवरी माह में शिखरजी प्रवास के दौरान 15 जनवरी को ज्ञानधर कूट पर असामाजिक तत्वों द्वारा किए गए अभद्र व्यवहार को भी उन्होंने अत्यंत शांतभाव से सहन किया। विपरीत परिस्थितियों में भी क्षमा, शांति और सहनशीलता बनाए रखना उनके संयमित साधु जीवन की विशेष पहचान है।

तप की अग्नि में तपता शरीर, आत्मध्यान में रमती आत्मा

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज की 496

उपवास एवं 61 पारणों की विलक्षण साधना के दौरान मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज स्वर्णभद्र कूट पर होने वाले प्रत्येक पारणे के साक्षी रहे। एक अवसर पर पारणा देखने से वंचित न रह जाएं, इसके लिए मुनिश्री ने बीसपंथी कोठी विमल छतरी से स्वर्णभद्र कूट तक की कठिन चढ़ाई मात्र 75 मिनट में पूर्ण की। यह केवल गति का रिकॉर्ड नहीं, बल्कि गुरु-भक्ति, साधु-साधना के प्रति अनुराग और तपस्वी संतों के प्रति श्रद्धा का जीवंत उदाहरण है।

साधना का अंकगणित : जहां संख्या भी साधना की कहानी कहती है

मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज की साधना के आंकड़े स्वयं में एक प्रेरणादायी अध्याय हैं। उन्होंने 24 अवसरों पर कुल 635 घंटे लगातार पद्मासन अथवा सुखासन में बैठकर तप-साधना की। इनमें एक अवसर पर अधिकतम 120 घंटे तक निरंतर साधना का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार 23 अवसरों पर कुल 826 घंटे लगातार खड्गासन में साधना की। इनमें एक अवसर पर अधिकतम 157 घंटे तक गौतम गणधर टोंक पर खड्गासन में रहकर साधना करना उनकी असाधारण तपशक्ति का परिचायक है। व्रत-उपवास की साधना का विस्तार तो और भी विस्मयकारी है। साधना काल में उन्होंने लगभग 5353 दिन, अर्थात साढ़े चौदह वर्ष से अधिक अवधि के व्रत-उपवास किए हैं। इनमें 16 बार सोलहकरण व्रत तथा 51 बार अष्टाह्निका व्रत भी सम्मिलित हैं। ये आंकड़े केवल गणना नहीं हैं। प्रत्येक संख्या के पीछे त्याग का एक प्रसंग, तप का एक अध्याय, आत्मसंयम की एक कहानी और आत्मा की ओर बढ़ता हुआ एक कदम छिपा है।

गुरुचरणों की छत्रछाया में साधना और साहित्य सेवा

मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज पिछले 22 वर्षों से अधिक समय से अपने दीक्षा गुरु परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज की छत्रछाया में साधनारत हैं। गुरु सान्निध्य में उन्होंने 80 से अधिक पंचकल्याणक एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सवों का अनुभव प्राप्त किया है। साथ ही गुरुवर द्वारा रचित साहित्य के संकलन एवं संपादन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जयपुर का गौरव : तप से समाज तक, समाज से आत्मकल्याण तक

जयपुर प्रवास के दौरान मुनिश्री द्वारा की गई साधनाओं में हाल ही में अष्टाह्निका व्रत, 35, 12 एवं 13 घंटे तक लगातार नमोकार महामंत्र उच्चारण-जाप्य साधना, पदमपुरा मंदिर की मात्र 10 घंटे में 1008 बाह्य परिक्रमा तथा 5, 13 और 40 घंटे लगातार पद्मासन साधना उल्लेखनीय रही है। वर्तमान में 21 जुलाई से 72 दिन की उनोदर तप साधना चल रही है, जो 1 अक्टूबर को अन्न आहार पारणा के साथ पूर्ण होगी। मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज का जीवन हमें यह संदेश देता है कि साधना कषायों को क्षीण करने, मन को निर्मल करने, आत्मा में स्थिर होने और परिग्रह से विरक्त होने की निरंतर प्रक्रिया है।

साधना को नमन, वंदन

जयपुर जैसे धर्मनगरी के लिए यह गौरव की बात है कि यहां ऐसे तपस्वी मुनिराज का चातुर्मास हो रहा है, जिनका जीवन स्वयं संयम का संदेश, तपस्या का प्रमाण और आत्मकल्याण की प्रेरणा बन चुका है। ऐसे तपोनिष्ठ, आत्मध्यानरत, संयममूर्ति एवं काय-क्लेश के जीवंत साधक, स्थविर मुनि अलंकरण से सम्मानित जयपुर गौरव मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज के चरणों में शत-शत नमन।

पदम जैन बिलाला: जनकपुरी, जयपुर

पुण्य-पाप के फल से बचने का एकमात्र मार्ग है आत्मचिंतन : आर्यिका 105 सिद्ध श्री माताजी

कलिंजरा. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विभव सागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका 105 सिद्ध श्री माताजी का चातुर्मास कलिंजरा, जिला बांसवाड़ा में चल रहा है। बुधवार को मंगल प्रवचन में माताजी ने पुण्य-पाप, कर्म के उदय और आत्मचिंतन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संसार के झगड़ों और द्वंद्वों में उलझने के बजाय प्रत्येक जीव को अपनी निज आत्मा का चिंतन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि ''जैसा बीज बोओगे, फल भी वैसा ही मिलेगा।'' पुण्य के उदय में अत्यधिक हर्षित और पाप के उदय में अत्यधिक दुखी नहीं होना चाहिए, क्योंकि दोनों ही संसार के विस्तार का कारण बनते हैं। मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में माध्यस्थ भाव बनाए रखना चाहिए। माताजी ने समझाया कि जब तक जीव संसार में है, तब तक पुण्य और पाप दोनों उसके साथ चलते हैं, लेकिन सिद्ध अवस्था प्राप्त करने के लिए अंततः पुण्य और पाप दोनों का त्याग करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि पुण्य के उदय से प्राप्त धन-संपत्ति का उपयोग धर्म, मंदिर, जिनवाणी एवं जीवकल्याण के कार्यों में करना चाहिए। यदि पुण्य से प्राप्त संपत्ति का उपयोग पाप के कार्यों में किया गया तो उसके परिणाम भी जीव को ही भोगने पड़ेंगे। प्रवचन में उन्होंने कर्म सिद्धांत को सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाते हुए कहा कि किसी के आने-जाने, मान-सम्मान, सुख-दुख तथा संयोग-वियोग के पीछे कर्म का उदय होता है। इसलिए परिस्थितियों को लेकर राग-द्वेष और विकल्प करने के बजाय कर्म के सिद्धांत को समझना चाहिए। उन्होंने निंदा से बचने की प्रेरणा देते हुए कहा कि ''निंदा का फल दूसरे को नहीं, स्वयं निंदा करने वाले को ही मिलता है।'' इसी प्रकार पाप कर्म करने के साथ-साथ उसकी अनुमोदना करना भी कर्मबंधन का कारण बनता है। आर्यिका श्री ने कहा कि मनुष्य को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिसका अपयश उसके चले जाने के बाद भी संसार में बना रहे। रावण का उदाहरण देते हुए उन्होंने समझाया कि गलत कर्म का परिणाम कितने ही समय बाद क्यों न मिले, जीव को उसका फल भोगना ही पड़ता है। अंत में उन्होंने कहा कि केवल धन कमाना ही जीवन का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। धन का सदुपयोग करने के लिए भी पुण्य की आवश्यकता होती है। जिनवाणी सुनना, धर्म को समझना और उसे जीवन में उतारना ही मनुष्य पर्याय की सार्थकता है। उन्होंने श्रद्धालुओं से संसार के द्वंद्वों को छोड़कर आत्मकल्याण की दिशा में पुरुषार्थ करने का आह्वान किया।

सुरेश चंद्र गांधी
नौगामा, जिला बांसवाड़ा, राजस्थान

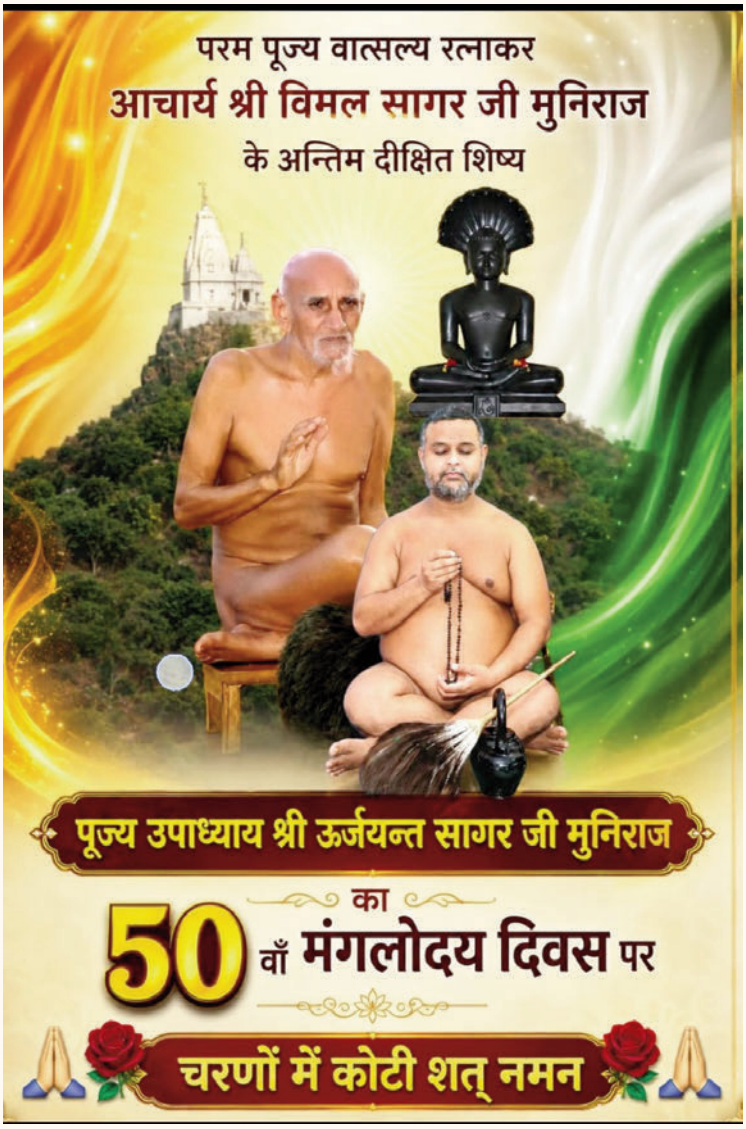

भगवान पार्श्वनाथ के मोक्षकल्याणक दिवस पर चढ़ाया निर्वाण लाडू

सनावद. शाबाश इंडिया

वर्तमान चौबीसी के तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का मोक्षकल्याणक दिवस बुधवार को मुकुट सप्तमी के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नगर के विभिन्न जैन मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान हुए और श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ स्वामी को निर्वाण लाडू अर्पित किए। पार्श्व ज्योति मंच के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र जैन भारती ने बताया कि श्री सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में भगवान का जलाभिषेक एवं शांतिधारा की गई। शांतिधारा में कमलेश भूच, हेमचंद पाटौदी, शैलेंद्र जैन, नरेश पाटनी एवं जंगलेश जैन ने भाग लिया। नित्य पूजा के बाद भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की विशेष पूजन-अर्चना की गई। इसके पश्चात प्रियम जैन, धीरेंद्र बाकलीवाल, नवीन भूच, राजू जैन, राकेश जैन, आशीष जैन, हीरामणि भूच, विनीता बाकलीवाल सहित अनेक श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक निर्वाण लाडू अर्पित किया। आदिनाथ जिनालय में भी श्रद्धालुओं द्वारा भगवान को निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। धार्मिक आयोजन के दौरान श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह और भक्तिभाव दिखाई दिया।

राजनीति

नमामि गंगे का अगला चरण

शक्ति सिंह चंदेल

गंगा भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय पहचान का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक है। हिमालय से निकलकर हजारों किलोमीटर की यात्रा तय करने वाली यह नदी केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन, आजीविका, कृषि, पर्यटन और सामाजिक संरचना की आधारशिला भी है। भारतीय सभ्यता के विकास में गंगा की भूमिका इतनी व्यापक रही है कि इसे केवल नदी नहीं, बल्कि जीवनदायिनी धारा के रूप में देखा जाता है। यही कारण है कि गंगा संरक्षण आज राष्ट्रीय महत्व का विषय बन चुका है। पिछले एक दशक में 'नमामि गंगे' अभियान ने गंगा संरक्षण को नई दिशा दी है। इसके अंतर्गत प्रदूषण नियंत्रण, सीवेज प्रबंधन, घाटों का विकास, जैव विविधता संरक्षण, ग्रामीण स्वच्छता, जन-जागरूकता और नदी तटीय क्षेत्रों के संरक्षण जैसे अनेक क्षेत्रों में प्रयास किए गए हैं। इन पहलों ने गंगा संरक्षण को लेकर जनचेतना बढ़ाने के साथ नदी को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में प्रमुख स्थान दिलाया है। हालांकि किसी भी बड़े पर्यावरणीय अभियान की सफलता केवल परियोजनाओं की संख्या या वित्तीय निवेश से नहीं मापी जा सकती। वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि जमीनी स्तर पर विकसित व्यवस्थाएं कितनी प्रभावी हैं और लंबे समय तक कितनी निरंतरता से काम कर सकती हैं। यही वह क्षेत्र है, जिस पर अब अधिक गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। गंगा संरक्षण किसी सीमित अवधि की परियोजना नहीं है। नदी में गिरने वाले नालों का प्रबंधन, सहायक नदियों का संरक्षण, आर्द्रभूमियों की सुरक्षा, नदी तटीय क्षेत्रों का संतुलन, जल गुणवत्ता की निगरानी और पर्यावरणीय जागरूकता ऐसे विषय हैं, जिन पर निरंतर काम आवश्यक है। बढ़ती जनसंख्या, तेजी से हो रहा शहरीकरण, औद्योगिक विस्तार और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियां इस जिम्मेदारी को और गंभीर बना रही हैं। इसलिए गंगा संरक्षण को केवल परियोजना आधारित दृष्टिकोण के बजाय दीर्घकालिक प्रशासनिक और सामाजिक दायित्व के रूप में देखने की आवश्यकता है। किसी भी नदी संरक्षण कार्यक्रम की स्थिरता इस बात पर निर्भर करती है कि स्थानीय स्तर पर उसके लिए कितनी मजबूत संस्थागत व्यवस्था मौजूद है।

संपादकीय

एसआईटी रिपोर्ट ने खोली आस्था व्यवस्था की पोल

अयोध्या राम मंदिर के चढ़ावे में कथित चोरी का मामला अब केवल कुछ कर्मचारियों द्वारा नकदी चोरी किए जाने की घटना भर नहीं रह गया है। एसआईटी की जांच ने मंदिर में चढ़ावे की गिनती, सुरक्षा, निगरानी और प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़ी गंभीर खामियों को सामने रखा है। उपलब्ध सीसीटीवी फुटेज की जांच में 27 अप्रैल से 5 जून 2026 के बीच करीब 70 संदिग्ध चोरी या नकदी की हेराफेरी की घटनाएं सामने आईं। फुटेज में गिनती से जुड़े कर्मचारियों द्वारा नोटों की गड्डियां और नकदी कपड़ों, जेबों तथा जूतों में छिपाते हुए दिखाई देने की बात सामने आई। कुछ अन्य कर्मचारियों पर सहयोग या आरोपियों को बचाने के प्रयास के आरोप भी जांच में दर्ज हुए। मामले में 8 लोगों की गिरफ्तारी हुई और जांच के दौरान करीब 79.85 लाख रुपये नकद बरामद किए गए। पुलिस और जांच एजेंसियों ने रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव को मामले में प्रमुख भूमिका वाला आरोपी बताया। जांच में यह भी सामने आया कि चढ़ावे की गिनती से जुड़ी व्यवस्था में ऐसे लोगों को जिम्मेदारियां मिलीं, जिनके बीच पारिवारिक या व्यक्तिगत संबंध थे। टिन्नू के पास चढ़ावे से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण स्थानों की चाबियां होने की बात भी सामने आई, जबकि इसके लिए स्पष्ट लिखित अधिकृत व्यवस्था नहीं थी। सबसे गंभीर सवाल चोरी करने वालों से भी आगे जाकर उस व्यवस्था पर खड़ा होता है, जिसने चोरी की गुंजाइश पैदा की। एसआईटी की जांच में सुरक्षा

मानकों के पालन में कमी, कर्मचारियों की पर्याप्त तलाशी न होना, निजी सामान पर प्रभावी रोक नहीं होना, पहचान आधारित निगरानी की कमजोरी और सीसीटीवी व्यवस्था में कमियां सामने आईं। निर्धारित कार्यप्रणाली के बावजूद कई सुरक्षा उपाय प्रभावी ढंग से लागू नहीं किए गए। यही संस्थागत कमजोरी लंबे समय तक चलती रही और चढ़ावे की सुरक्षा पर सवाल खड़े हुए। यही इस पूरे प्रकरण का सबसे बड़ा सबक है। आस्था से जुड़े संस्थानों में केवल श्रद्धा और विश्वास पर्याप्त नहीं होते; उतनी ही मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था भी जरूरी होती है। मंदिर में आने वाला प्रत्येक रुपया श्रद्धालु की आस्था का प्रतीक है। इसलिए उसके संग्रह, गिनती, बैंक में जमा और लेखांकन की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी तथा निगरानी योग्य होनी चाहिए। चंपत राय और अनिल मिश्रा के संबंध में एसआईटी की अंतिम रिपोर्ट से जुड़ी खबरों में व्यक्तिगत चोरी या गबन में उनकी संलिप्तता का ठोस प्रमाण नहीं मिलने की बात सामने आई है। हालांकि, व्यक्तिगत आपराधिक जिम्मेदारी और संस्थागत जवाबदेही को एक ही तराजू में तौलना उचित नहीं होगा। किसी अधिकारी के खिलाफ व्यक्तिगत अपराध का सबूत न मिलना और व्यवस्था में खामियां होना– दोनों अलग-अलग बातें हैं। इसलिए इस मामले में निष्पक्षता का तकाजा है कि आरोपों और तथ्यों के बीच स्पष्ट अंतर रखा जाए। इस मामले में राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी खूब हुए। कुछ दावों में चोरी की रकम को कहीं अधिक बताया गया, जबकि जांच के दौरान बरामद रकम करीब 80 लाख रुपये रही।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

वंदे मातरम् पर विवाद...

स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व पर देशभक्ति और राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान प्रत्येक भारतीय की सामूहिक जिम्मेदारी है। ऐसे समय में कांग्रेस मुख्यालय में राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' के गायन को लेकर उठा विवाद फिर राजनीतिक बहस का विषय बन गया है। 15 अगस्त को नई दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान 'वंदे मातरम्' के गायन के समय सोनिया गांधी के कुछ हाव-भाव को लेकर भाजपा ने आपत्ति जताई। भाजपा नेताओं का आरोप है कि उन्होंने राष्ट्रगीत का गायन रोकने का संकेत दिया। इसी आधार पर कर्नाटक के मंगलुरु में भाजपा नेता विकास पुत्तूर ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई और कार्रवाई नहीं होने पर कर्नाटक उच्च न्यायालय जाने की चेतावनी दी। हालांकि, मामला अभी आरोप और जांच के स्तर पर है। इसलिए किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा। कांग्रेस ने आरोप को खारिज करते हुए कहा है कि सोनिया गांधी मंच पर लंबे समय से खड़े कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के लिए कुर्सी लाने का संकेत दे रही थीं, न कि 'वंदे मातरम्' रोकने का। ऐसे में अंतिम निष्कर्ष जांच और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर ही होना चाहिए। इस विवाद का एक बड़ा पक्ष 'वंदे मातरम्' से जुड़ा ऐतिहासिक संदर्भ भी है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की इस रचना ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, इसके कुछ अंशों और धार्मिक संदर्भों को लेकर मुस्लिम लीग तथा कुछ मुस्लिम नेताओं ने आपत्ति जताई थी। 1937 में यह विषय कांग्रेस के भीतर भी गंभीर चर्चा का कारण बना। 17 अक्टूबर 1937 को मुस्लिम लीग ने कांग्रेस पर 'वंदे मातरम्' को राष्ट्रीय गीत के रूप में थोपने का आरोप लगाया था। इसके बाद कांग्रेस में इसके सार्वजनिक उपयोग और कुछ अंशों को लेकर विचार-विमर्श हुआ। 20 अक्टूबर 1937 को जवाहरलाल नेहरू ने सुभाषचंद्र बोस को लिखे पत्र में गीत की 'आनंदमठ' से जुड़ी पृष्ठभूमि और उसके कुछ हिस्सों को लेकर चर्चा की। इसके बाद कांग्रेस कार्यसमिति ने गीत के उन शुरूआती अंशों के उपयोग का निर्णय लिया, जिन पर व्यापक सहमति बन सकती थी। आज भाजपा इसे कांग्रेस की तुष्टीकरण की राजनीति का उदाहरण बताती है, जबकि कांग्रेस समर्थक इसे उस समय की सामाजिक और धार्मिक संवेदनशीलताओं को ध्यान में रखकर लिया गया निर्णय मानते हैं। इतिहास को देखते हुए इतना स्पष्ट है कि 'वंदे मातरम्' पर कांग्रेस के भीतर गंभीर राजनीतिक और वैचारिक बहस हुई थी। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि 'वंदे मातरम्' भारत का राष्ट्रगीत है, जबकि 'जन गण मन' राष्ट्रगान है। 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि 'जन गण मन' राष्ट्रगान होगा और स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले 'वंदे मातरम्' को भी समान सम्मान दिया जाएगा। इसलिए राष्ट्रगीत का सम्मान किसी राजनीतिक दल की संपत्ति नहीं है। भाजपा हो या कांग्रेस, किसी भी दल को राष्ट्रीय प्रतीकों पर राजनीतिक स्वामित्व का दावा नहीं करना चाहिए। यदि किसी नेता के व्यवहार पर सवाल उठता है तो निष्पक्ष जांच होनी चाहिए, लेकिन बिना प्रमाण आरोप को अंतिम सत्य मानना भी लोकतांत्रिक मर्यादा के अनुरूप नहीं है। देशभक्ति किसी दल की बपौती नहीं है। भारत की आजादी किसी एक परिवार, पार्टी या संगठन की देन नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के संघर्ष और बलिदान का परिणाम थी। इसलिए 'वंदे मातरम्' जैसे राष्ट्रीय प्रतीकों को राजनीतिक हथियार बनाने के बजाय उनकी ऐतिहासिक विरासत को समझना जरूरी है। राष्ट्रगीत किसी दल का नहीं, पूरे राष्ट्र का है।

स्वतंत्रता दिवस सप्ताह में झंडारोहण व वृक्षारोपण

जयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतीय श्रीमाल जैन जागृति संस्था एवं युवा मंडल के संयुक्त तत्वावधान में संस्था की भूमि पर स्वतंत्रता दिवस सप्ताह के तहत झंडारोहण एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम उत्साह और गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रप्रेम के साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। युवा मंडल के अध्यक्ष चमत्कार जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ कैलाश चंद एवं अंकित जैन परिवार द्वारा दीप प्रज्वलन एवं चित्र अनावरण के साथ हुआ। इसके बाद राष्ट्रध्वज फहराकर देश के प्रति सम्मान और देशभक्ति की भावना का संदेश दिया गया। ध्वजारोहण कैलाश चंद, निलेश जैन एवं विपिन जैन (सेसा वाले) ने किया। पर्यावरण

संरक्षण एवं हरियाली का संदेश देते हुए प्रथम पौधे का रोपण शांत कुमार एवं सभ्य जी जैन (वजीरपुर वाले) ने किया। इसके बाद उपस्थित समाजबंधुओं ने 25 पौधे लगाए और उनकी नियमित देखभाल करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष अजय जैन, परम संरक्षक जिनेंद्र जैन एवं पारस जैन, महेश जैन, कैलाश जैन, राजू जी, ताराचंद जैन, अभिषेक जैन तथा युवा मंडल के सचिव गोकुलेंद्र जैन, सुशील जैन सहित अन्य सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। महिला मंडल अध्यक्ष पिंकी जैन सहित समाजबंधुओं की भी सक्रिय भागीदारी रही। आयोजन में अल्पाहार की व्यवस्था में जितेंद्र जैन सांचोली, देवेंद्र, लोकेन्द्र जैन जीत वाले, सागर जैन, मनीष जैन तथा तारों की कूट ने सहयोग प्रदान किया। युवा मंडल के परम संरक्षक सुनील जैन एडवोकेट ने सभी सहयोगकताओं एवं उपस्थित समाजबंधुओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन समाज में एकता, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रप्रेम की भावना को मजबूत करते हैं। संस्था के महासचिव डॉ. इंद्र कुमार जैन ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य सामाजिक एकजुटता के साथ "हरियाली बढ़ाएं, पर्यावरण बचाएं" का संदेश जन-जन तक पहुंचाना रहा। कार्यक्रम संयोजक एवं संस्था के कोषाध्यक्ष नवल जैन ने सभी उपस्थित अतिथियों, सहयोगकर्ताओं एवं समाजबंधुओं का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

जीवन साधनों में नहीं, साधना में है : अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

पुष्पगिरी (सोनकच्छ)। शाबाश इंडिया

परम पूज्य पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज के सानिध्य में अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज एवं उपाध्याय श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ पुष्पगिरी में वषायोग हेतु विराजमान हैं। उनके सानिध्य में प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रातः 4 बजे भगवान की पूजा-अर्चना के बाद अभिषेक, शांतिधारा एवं प्रवचन सहित विभिन्न धार्मिक आयोजन होते हैं। इसी क्रम में आज उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने कहा कि "हे परमात्मा, तू भी अद्भुत है। सबको खाली हाथ भेजता है... न आते वक्त कुछ लाना पड़ा, न जाते वक्त कुछ ले जाना पड़ा।" उन्होंने कहा कि आज वे मनुष्य की रोजमर्रा की जिंदगी को देख रहे हैं। आज आदमी, आदमी नहीं रहा, बल्कि उसका जीवन मशीन बन गया है। पूरा जीवन यंत्र पर चल रहा है और आदमी मशीन का मुनीम बनकर रह गया है। हाथ में मोबाइल न हो तो दिन खराब, गाड़ी न हो तो शरीर खराब और रेस्टोरेंट न जाएं तो पेट खराब। उन्होंने कहा कि मशीन और यंत्र चलाते-चलाते मनुष्य स्वयं यंत्र बन गया है। अब उसका खाना-पीना, हंसना-रोना, बोलना, सोना-जागना और दैनिक जीवन की गतिविधियां भी यंत्रवत होती जा

रही हैं। आचार्य श्री ने कहा कि बड़े शहरों और महानगरों में मनुष्य यंत्र बन गया है। इस यंत्र बने मनुष्य को एक जीवंत मंत्र की सख्त जरूरत है। यदि समय रहते उसे यह जीवन-मंत्र नहीं मिला तो वह दिन दूर नहीं, जब मनुष्य मानसिक रूप से असंतुलित होकर जीवन जीने को मजबूर हो जाएगा। उन्होंने कहा कि भोग-विलासिता और भौतिक संसाधनों का संग्रह करने में मनुष्य इस कदर पीछे पड़ा है कि वह भूल ही गया है कि–

जीवन साधनों में नहीं, साधना में है।
राग में नहीं, त्याग में है।
भोग में नहीं, योग में है।

आचार्य श्री ने कहा कि यही सुखी जीवन का मूल मंत्र है। साधनों में जीवन का वास्तविक सुख नहीं है, बल्कि साधना में जीवन का सुख है। जिन घर-परिवारों में जितनी अधिक सुख-सुविधाएं बढ़ती जा रही हैं, वहां उतनी ही अधिक अशांति और परेशानी भी दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को सबसे पहले स्वयं को पहचानने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने प्रेरक भाव रखते हुए कहा–

"तू अपने आप को पहचान...
तू बेशक कोहिनूर है,
लेकिन सामने वाला तेरी कीमत अपनी औकात और अपनी हैसियत से लगाएगा।"

उन्होंने श्रद्धालुओं से भौतिक साधनों की अंधी दौड़ से बाहर निकलकर आत्मचिंतन, संयम और साधना की ओर बढ़ने का आह्वान किया। यह जानकारी प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल, औरंगाबाद ने दी।

देशभक्ति गीतों से गूंजा महावीर स्कूल, 'वतन के तराने' के 5वें संस्करण में झूमे दर्शक

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप जयपुर गोल्ड एवं जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल फेडरेशन नॉर्दर्न रीजन के संयुक्त तत्वावधान में 'वतन के तराने' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। देशभक्ति गीतों से सजे इस आयोजन में कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से ऐसा समां बांधा कि दर्शक झूमने को मजबूर हो गए। ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष राकेश गोघा एवं अध्यक्ष राजकुमार बैद ने बताया कि 'वतन के तराने' देशभक्ति गीतों पर आधारित कार्यक्रम का 5वां संस्करण था, जिसका आयोजन 16 अगस्त को महावीर स्कूल में किया गया। समारोह का दीप प्रज्वलन समाजसेवी एवं जवाहरात कारोबारी मनोज-रेखा सेठी ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निखिल-छवि सेठी एवं गौरिका जैन रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम समन्वयक सुरेंद्र पाटनी एवं संयोजक भरत जैन और मनीष जैन ने बताया कि कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध गायक कलाकार डॉ. गौरव जैन (सारेगामा फेम), संजय राजजादा (एबीसीएल फेम) एवं नेहा जैन ने देशभक्ति गीतों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। डॉ. गौरव जैन ने ''जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा'' तथा ''कर चले हम फिदा जान-ओ-तन साथियों, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों'' जैसे लोकप्रिय देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए। नेहा जैन ने ''वंदे मातरम्'', ''ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी'' तथा ''देश रंगीला'' जैसे गीतों से माहौल को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। संजय राजजादा ने ''ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम'', ''मेरे देश की धरती सोना उगले-उगले हीरे मोती'', ''संदेश आते हैं'' और ''दुल्हन चली'' सहित कई लोकप्रिय गीत प्रस्तुत किए। राकेश गोघा ने ''ऐ मेरे प्यारे

वतन'' गीत प्रस्तुत किया, जबकि गौरव एवं नेहा जैन ने ''हर करम अपना करेंगे'' गीत की प्रस्तुति दी। रिया जैन ने ''छोड़ो कल की बातें'' तथा संजय राजजादा एवं गौरव जैन ने ''मेरा रंग दे बसंती चोला'' प्रस्तुत कर खूब तालियां बटोरीं। शानदार देशभक्ति गीतों ने पूरे आयोजन को देशप्रेम से सराबोर कर दिया। दर्शकों ने गीतों पर जमकर तालियां बजाईं और उत्साह के साथ कार्यक्रम का आनंद लिया। गायक कलाकारों का साथ की-बोर्ड पर कपिल बलोदिया एवं पवन जैन, तबले पर सावन डांगी, ढोलक पर पावन डांगी तथा ऑक्टापैड पर इरशाद खान ने दिया। समारोह का मंच संचालन राकेश गोघा एवं हरेश पाटनी ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष राजकुमार बैद ने अतिथियों का स्वागत किया। अंत में ग्रुप सचिव मनीष जैन चांदवाड़ ने वर्षभर की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सेवा सप्ताह का शुभारंभ पक्षी सेवा से, जीवदया का दिया अनूठा संदेश

ब्यावर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप सनशाइन द्वारा आयोजित सेवा सप्ताह का शुभारंभ श्री श्वेतांबर सकल जैन दादावाड़ी में पक्षी सेवा के पुनीत एवं प्रेरणादायी आयोजन के साथ हुआ। सेवा सप्ताह के प्रथम दिन आयोजित इस जीवदया कार्यक्रम में ग्रुप के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर जीव मात्र के प्रति करुणा, दया और सेवा का संदेश दिया। ग्रुप के अध्यक्ष राहुल ओस्तवाल ने बताया कि दोपहर 2 बजे जैन सोशल ग्रुप सनशाइन के सदस्य श्री श्वेतांबर सकल जैन दादावाड़ी में एकत्रित हुए। कार्यक्रम के दौरान पक्षियों के लिए विशेष रूप से बाजरा, ज्वार एवं मक्का की व्यवस्था की गई तथा दादावाड़ी परिसर में निर्धारित स्थानों पर इन अनाजों को श्रद्धापूर्वक बिखेरा गया। जैन संस्कृति एवं परंपरा में जीवदया को विशेष महत्व दिया जाता है। इसी भावना को जीवंत करते हुए पक्षियों को भी आत्मीयता और अपनत्व के साथ भोजन के लिए आमंत्रित किया गया, जिस प्रकार किसी अतिथि का स्वागत किया जाता है। परंपरा के अनुसार प्रेमपूर्वक आवाज लगाते हुए ''पधारो सा... भोजन प्रसादी तैयार है।'' कहा गया। इस आत्मीय निमंत्रण के बाद बड़ी संख्या में पक्षी दाना चुगने के लिए पहुंचे। पक्षी सेवा का यह दृश्य उपस्थित लोगों के लिए भावुक एवं प्रेरणादायी रहा। कार्यक्रम में जैन सोशल ग्रुप के जोन कोऑर्डिनेटर मनीष मेहता, पूर्व अध्यक्ष पंकज डेडिया, विक्रम सांखला, कोषाध्यक्ष वीरेंद्र बोहरा, अमित बोहरा, कमल कटारिया, रूपेश कोठारी, प्रतीक खटोड़, हीरेन भंडारी, दिनेश तातेड़, विनोद रांका, वीरेश सांखला एवं प्रीतम सांखला सहित शहर के अन्य गणमान्य नागरिक एवं उनके परिवारजन उपस्थित रहे। सभी ने सेवा सप्ताह के अंतर्गत आयोजित होने वाले आगामी सेवा कार्यों में भी इसी उत्साह और सामूहिक सहभागिता के साथ जुड़ने का संकल्प लिया। ग्रुप के मंत्री भूपेश भंसाली ने बताया कि जैन सोशल ग्रुप सनशाइन का यह सेवा सप्ताह समाज में सेवा, सहयोग, जीवदया और मानवीय संवेदनाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। ग्रुप का प्रयास है कि सप्ताहभर विभिन्न सेवा गतिविधियों के माध्यम से अधिक से अधिक सदस्यों को सेवा कार्यों से जोड़ा जाए और ''सेवा से संस्कार, संस्कार से समाज'' की भावना को मजबूत किया जाए।

''लहरिया तो ला दो म्हारा साहिबा'' और ''ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तू'' की मनमोहक प्रस्तुतियां

जयपुर. शाबाश इंडिया। विकल्प नाट्य संगठन की ओर से जवाहर कला केंद्र में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में नृत्य एवं संगीत की संध्या ''एक शाम वतन के नाम'' प्रस्तुत की गई। देशभक्ति से ओतप्रोत इस सांस्कृतिक संध्या में कलाकारों ने नृत्य और संगीत की शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। समारोह के मुख्य अतिथि हरीश गुप्ता तथा विशिष्ट अतिथि रंजन गौतम एवं श्रीमती सुदेश तनेजा रहे। अतिथियों ने विकल्प नाट्य संगठन के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि मौजूदा दौर में ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन समाज के लिए आवश्यक है। विकल्प के अध्यक्ष मोहनलाल गोयल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सांस्कृतिक संध्या में मीरा सक्सेना के निर्देशन में उमा गौतम, अलका अग्रवाल, अलका गर्ग, आशा वर्मा, डॉ. उर्मिला जेठानी, सोनम जैन, संतोष मीना, डॉ. कुसुम कौशिक, डॉ. रश्मि गोगर, करुणा सरोजा, अंजू रावत, हेमलता यादव, शालिनी अगरोइया, अनुरेखा गुप्ता, भावना जलुथरिया एवं पुलकित प्रभव ने प्रस्तुतियां दीं। कलाकारों ने जगजीत सिंह की गजल ''तेरे हरम में बसने वालों की'' पर सुंदर नृत्य प्रस्तुति देकर दर्शकों का दिल जीत लिया। इसके साथ ही ''लहरिया तो ला दो म्हारा साहिबा'', ''ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तू'' तथा देशभक्ति गीत ''तलवारों पर सर वार दिए'' पर शानदार नृत्य प्रस्तुतियों ने वातावरण को देशभक्ति और भावनाओं से भर दिया। संगीत प्रस्तुतियों में भारती शर्मा ने ''ऐ मालिक तेरे बंदे हम'', जबकि ओम गोस्वामी ने ''जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा'' प्रस्तुत किया। मनमोहन सिंह रावत, केशव तैलंग, प्रभोद गोस्वामी एवं पप्पू सिंह ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीतों की प्रस्तुतियां देकर सभागार में राष्ट्रप्रेम का माहौल बना दिया। कार्यक्रम के अंत में महासचिव भगवान कृपलानी ने सभी अतिथियों, कलाकारों एवं सहयोगकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन गौरव शर्मा ने किया, जबकि प्रकाश व्यवस्था राजेंद्र शर्मा 'राजू' ने संभाली।

भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस पर श्रद्धालुओं ने निर्वाण लाडू चढ़ाए

निंबाहेड़ा. शाबाश इंडिया

नगर में बुधवार को दिगंबर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस को श्रद्धापूर्वक मनाया। इस अवसर पर श्री पार्श्वनाथ भगवान की विशेष पूजा-अर्चना कर निर्वाण लाडू अर्पित किए गए। समाज के प्रवक्ता मनोज सोनी ने बताया कि आदर्श कॉलोनी स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जिनालय परिसर में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में समाज अध्यक्ष अशोक गदिया एवं महामंत्री वी.के. जैन के नेतृत्व में सकल समाज ने भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस पर श्री कल्याण मंदिर विधान की पूजा की। लाभार्थी आभा-चिराग बाकलीवाल परिवार के सहयोग से आयोजित विधान के पश्चात भगवान पार्श्वनाथ को सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। अनुष्ठान एवं पूजा कार्यक्रम समाज के सुशील काला, महेंद्र कुमार दावड़ा, कमलेश जैन, जेपी पटवारी एवं प्रवीणा अग्रवाल ने विधि-विधान से संपन्न कराया। विधान मंडप में श्रद्धालुओं ने बारी-बारी से अर्घ्य अर्पित किए। इस अवसर पर भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान शांतिनाथ के कलशाभिषेक, शांतिधारा सहित विभिन्न धार्मिक क्रियाएं भी संपन्न हुईं। कार्यक्रम में महिला मंडल संरक्षिका इंदुबाला सोनी, अध्यक्ष शशि जैन सहित समाज के प्रबुद्धजनों एवं श्रद्धालुओं ने भाग लिया। मोक्ष सप्तमी के अवसर पर समाज की कुंवारी बालिकाओं ने उपवास व्रत रखा तथा भगवान की विशेष पूजा-अर्चना कर धर्मलाभ लिया।

मां की सेवा—सबसे बड़ा धर्म

मां केवल एक रिश्ता नहीं, बल्कि वह भावना है, जिसके आगे संसार की हर दौलत छोटी लगती है। मां वह शक्ति है, जो स्वयं कष्ट सहकर भी अपनी संतान के चेहरे पर मुस्कान देखना चाहती है। वह हमारे जीवन की पहली गुरु, पहली मित्र और सबसे बड़ी शुभचिंतक होती है। इसलिए मां की सेवा करना केवल हमारा कर्तव्य नहीं, बल्कि सबसे बड़ा धर्म है। जब बच्चा जन्म लेता है, तब मां अपनी नींद, आराम और इच्छाओं को पीछे छोड़कर उसकी परवरिश में लग जाती है। बच्चे की छोटी-सी परेशानी भी मां को बेचैन कर देती है। वह स्वयं भूखी रह सकती है, लेकिन अपने बच्चे को भूखा नहीं देख सकती। उसकी उंगली पकड़कर चलना सिखाने वाली मां ही हमें जीवन की राह पर आगे बढ़ना सिखाती है। बचपन में हम मां पर निर्भर रहते हैं, लेकिन समय के साथ परिस्थितियां बदल जाती हैं। बच्चे बड़े होते हैं, अपने परिवार और काम में व्यस्त हो जाते हैं और मां धीरे-धीरे वृद्ध होने लगती है। जिस मां ने हमारी छोटी-छोटी जरूरतों का ध्यान रखा, उसी मां को वृद्धावस्था में हमारे समय, प्रेम और सहारे की जरूरत होती है। दुर्भाग्य से आज कई बार माता-पिता को वृद्धावस्था में अकेलापन महसूस होता है। उनके पास सुविधाएं तो होती हैं, लेकिन बातचीत करने वाला कोई नहीं होता। उन्हें महंगे उपहारों से ज्यादा अपने बच्चों के कुछ पल चाहिए। मां को सबसे ज्यादा खुशी तब मिलती है, जब बेटा या बेटी उसके पास बैठकर पूछता है—''मां, आज आपकी तबीयत कैसी है?'' मां की सेवा का अर्थ केवल दवा या भोजन की व्यवस्था करना नहीं है। उसकी सेवा में उसके साथ बैठना, उसकी बातें सुनना, उसकी भावनाओं को समझना, उसके निर्णयों का सम्मान करना और उसे यह एहसास कराना भी शामिल है कि वह परिवार पर बोझ नहीं, बल्कि परिवार की सबसे महत्वपूर्ण सदस्य है। हमें यह भी समझना चाहिए कि मां की सेवा करने का सही समय तब नहीं है, जब वह जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंच जाए। सही समय आज है। जब मां हमारे साथ है, तब उसके चेहरे पर मुस्कान लाना ही सबसे बड़ी उपलब्धि है। उसके चले जाने के बाद तस्वीर पर फूल चढ़ाने और उसकी याद में आंसू बहाने से बेहतर है कि उसके जीवनकाल में ही उसके चरणों में सम्मान और प्रेम अर्पित किया जाए। हम मंदिरों में जाकर भगवान की पूजा करते हैं, तीर्थयात्राएं करते हैं और अनेक धार्मिक कार्य करते हैं। लेकिन यदि घर में मां दुखी है और हम उसकी उपेक्षा कर रहे हैं, तो हमारी पूजा अधूरी है। मां की सेवा में ही ईश्वर की सेवा का भाव छिपा है। मां के लिए सबसे बड़ी जरूरत धन नहीं, अपनापन है। उसे यह महसूस होना चाहिए कि उसके बच्चे उसके साथ हैं। वृद्धावस्था में उसका हाथ पकड़ना, उसके साथ कुछ समय बिताना और उसकी छोटी-छोटी इच्छाओं को पूरा करना हमारे जीवन का सौभाग्य होना चाहिए। मां ने हमें चलना सिखाया था; अब हमारी बारी है कि हम उसके जीवन की राह को आसान बनाएं। उसने हमारी उंगली पकड़कर हमें गिरने से बचाया था; अब हमारा हाथ उसके लिए सहारा बने। अंततः यही कहा जा सकता है कि मां की सेवा कोई एहसान नहीं, बल्कि हमारे जीवन का ऋण चुकाने का एक छोटा-सा प्रयास है। संसार के सभी धर्म हमें प्रेम, करुणा और सेवा की शिक्षा देते हैं और इन तीनों का सबसे सुंदर रूप मां की सेवा में दिखाई देता है। जिस घर में मां के चेहरे पर मुस्कान होती है, उस घर में ईश्वर का आशीर्वाद स्वयं निवास करता है।

अनिल माथुरः ज्वाला-विहार, जोधपुर

''वस्तुत्व महाकाव्य'' पर राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

देशभर के मूर्धन्य विद्वानों ने किया गहन दार्शनिक मंथन, पूज्य समत्वसागर जी महाराज की प्रथम कृति ''समत्व की अंतर्यात्रा'' का हुआ विमोचन

आगरा. शाबाश इंडिया

अध्यात्मशिरोमणि पट्टाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज द्वारा रचित महत्वपूर्ण दार्शनिक कृति ''वस्तुत्व महाकाव्य'' पर 16 एवं 17 अगस्त को निर्मल सेवा सदन, छीपीटोला, आगरा में दो दिवसीय राष्ट्रीय जैन विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन भव्य एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। संगोष्ठी को अध्यात्मशिरोमणि पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज का मंगल आशीर्वाद तथा परमप्रभावक श्रमण श्री समत्वसागर जी महाराज, श्रमण श्री शीलसागर जी महाराज एवं श्रमण श्री सुप्रभातसागर जी महाराज का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। संगोष्ठी का विशेष आकर्षण परमप्रभावक श्रमण श्री समत्वसागर जी महाराज की प्रथम कृति समत्व की अंतर्यात्रा का देश के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा गरिमामय विमोचन रहा। इस अवसर पर विद्वानों ने कृति को अध्यात्म, आत्मचिंतन एवं समत्व की दिशा में प्रेरित करने वाली महत्वपूर्ण रचना बताते हुए इसके प्रकाशन को जैन साहित्य जगत की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिष्ठित विद्वानों, साहित्यकारों एवं शोधकर्ताओं ने वस्तुत्व महाकाव्य के दार्शनिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं समकालीन पक्षों पर शोधपरक आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने कृति को भारतीय ज्ञान-परंपरा की महत्वपूर्ण एवं मौलिक दार्शनिक-साहित्यिक उपलब्धि बताते हुए वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

चार सत्रों में हुआ विद्वत विमर्श

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का संचालन डॉ. पंकज शास्त्री, इंदौर ने किया। अध्यक्षता डॉ. श्रेयांस कुमार, बड़ौत ने की तथा प्रो. अशोक कुमार, वाराणसी सारस्वत अतिथि रहे। प्रथम सत्र में प्रो. अनेकांत जैन, दिल्ली, डॉ. सुरेंद्रकुमार भारती, बुरहानपुर एवं प्रो. वीरसागर, दिल्ली ने अपने शोधपरक आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का संचालन डॉ. आशीष जैन बम्हौरी ने किया। अध्यक्षता प्रो. वीरसागर ने की तथा पं. विनोद रजवांस सारस्वत अतिथि रहे। इस सत्र में विद्वत्श्री विकर्ष शास्त्री, डॉ. आशीष जैन शाहगढ़, डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर एवं प्रो. अशोक कुमार, वाराणसी ने शोधपरक आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र का संचालन डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ने किया। अध्यक्षता प्रो. अशोक कुमार, वाराणसी ने की तथा डॉ. श्रेयांस कुमार, बड़ौत सारस्वत अतिथि रहे। सत्र में पं. विनोद कुमार रजवांस, डॉ. नलिन के. शास्त्री एवं डॉ. श्रेयांस कुमार, बड़ौत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ एवं समापन सत्र का संचालन डॉ. अभिषेक जैन एवं कवि हृदय विकर्ष शास्त्री ने किया। डॉ. सुरेंद्रकुमार भारती सारस्वत अतिथि रहे। इस सत्र में डॉ. आशीष जैन बम्हौरी, डॉ. नीलम सर्राफ, डॉ. अमित जैन आकाश, वाराणसी एवं डॉ. अभिषेक जैन शिक्षाचार्य, दमोह ने अपने विचार एवं शोधपरक आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. पंकज जैन रहे संयोजक, विकर्ष शास्त्री विशेष संयोजक

राष्ट्रीय जैन विद्वत संगोष्ठी के संयोजक डॉ. पंकज जैन, इंदौर रहे, जबकि विशेष संयोजक विद्वत्श्री विकर्ष शास्त्री ने आयोजन के समन्वय एवं व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों को एक मंच पर लाकर वस्तुत्व महाकाव्य जैसी महत्वपूर्ण कृति पर व्यापक एवं सार्थक विमर्श का अवसर मिला। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में अध्यक्षीय वक्तव्यों एवं पूज्य मुनिश्री के मंगल प्रवचनों के माध्यम से वस्तुत्व, आत्मस्वरूप, समत्व एवं भारतीय दार्शनिक चिंतन के विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया। विद्वानों ने कहा कि वस्तुत्व महाकाव्य केवल साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि व्यक्ति को वस्तु के यथार्थ स्वरूप से परिचित कराते हुए आत्मचिंतन एवं समत्व की दिशा में प्रेरित करने वाली दार्शनिक काव्यकृति है।

हावड़ा में श्रद्धा व भक्तिभाव से संपन्न हुआ भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, डबसन में गूंजे प्रभु के जयकारे, श्रद्धालुओं ने अर्पित किए निर्वाण लाडू

हावड़ा. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, डबसन, हावड़ा में सावन सुदी सप्तमी के पावन अवसर पर जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर एवं उपसर्ग विजेता भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में जैन धर्मावलंबियों ने मंदिर पहुंचकर प्रभु चरणों में श्रद्धा अर्पित की। प्रातः 6 बजे से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान पार्श्वनाथ के मस्तकाभिषेक, विश्व शांति की कामना के लिए शांतिधारा एवं सामूहिक पूजन के साथ हुआ। इसके पश्चात साधर्मी बंधुओं की उपस्थिति में निर्वाण कांड का पाठ किया गया और श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक भगवान को निर्वाण लाडू अर्पित किए। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते

हुए प्रतिमाधारी मिलाप चंद जैन ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन एवं दर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ क्षमा, अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह के साक्षात प्रतीक थे। उन्होंने अपने ऊपर घोर उपसर्ग करने वाले कमठ पर भी क्षमा की वर्षा कर दुनिया को मैत्री एवं करुणा का संदेश दिया। वर्तमान वैश्विक परिवेश में उनके बताए मार्ग पर चलना ही विश्व शांति का व्यावहारिक उपाय है। पूरे आयोजन के दौरान मंदिर परिसर ''श्री पार्श्वनाथ भगवान की जय'' और ''जैनम जयतु शासनम्'' के जयघोषों से गुंजायमान रहा। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ भगवान की आराधना कर धर्मलाभ लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समाज के अग्रणी महानुभावों सुरेश गंगवाल, सुशील पांड्या, भागचंद बडजात्या, भानुप्रकाश कासलीवाल, धीरेन जैन, पंकज बगड़ा, सुरेंद्र जैन, सज्जन झांझरी, रमेश जैन, नितेश जैन, प्रतीक जैन, अविनाश लुहाड़िया, शशि काशलीवाल, पुष्पा गंगवाल सहित समस्त साधर्मी बंधुओं का सराहनीय योगदान रहा।

भीनमाल में 80वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया

भीनमाल. शाबाश इंडिया। स्थानीय शिवराज स्टेडियम में देशभक्ति, उत्साह और उमंग के साथ 80वां स्वतंत्रता दिवस समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। समारोह में अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. पूजा सक्सेना एवं उपखंड अधिकारी मोहित कासनिया ने ध्वजारोहण किया। समारोह का मुख्य आकर्षण एनसीसी कैडेट्स की अनुशासित परेड रही। इसके अलावा घोष प्रदर्शन, पिरामिड एवं लेजिम व्यायाम की शानदार प्रस्तुतियों ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया। नागरिकों एवं प्रशासन के बीच आयोजित रोमांचक रस्साकशी मुकाबले में प्रशासन की टीम विजयी रही। समारोह में विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत नृत्य एवं गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर वातावरण को राष्ट्रप्रेम से सराबोर कर दिया। विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले 76 प्रतिभावान व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। समारोह का मंच संचालन मीठालाल जांगिड़ ने अपने ओजस्वी अंदाज में किया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों ने देश की एकता, अखंडता और विकास के लिए समर्पित रहने का संकल्प लिया। इस अवसर पर तहसीलदार रुपाराम सोलंकी, नायब तहसीलदार मीठाराम जोशी, विकास अधिकारी राजकुमार, अधिशासी अधिकारी रवि खन्ना, सीबीईओ गजेंद्र देवासी, पुलिस थानाधिकारी राजेंद्र सिंह राजपुरोहित, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी सुरेश विश्नोई सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं अधिकारी उपस्थित रहे। **-मुकेश सोलंकी: भीनमाल**

जैन समाज ने मनाई मोक्ष सप्तमी, भगवान पार्श्वनाथ को चढ़ाया निर्वाण लाडू

रूठियाई में 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक मनाया

रूठियाई. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन समाज रूठियाई द्वारा बुधवार को जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक मोक्ष सप्तमी के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जैन मंदिरों में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए गए तथा भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू अर्पित किए गए। समाज के प्रचार मंत्री अमित जैन सेंकी ने बताया कि नारोनी स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ मंगलोदय तीर्थ में सुबह भगवान का अभिषेक, शांतिधारा, नित्यनियम पूजन एवं भगवान पार्श्वनाथ की विशेष पूजा-अर्चना की गई। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, नारोनी में निर्वाण लाडू चढ़ाने का प्रथम सौभाग्य अशोक जैन शिक्षक एवं दिव्यांग जैन को तथा द्वितीय सौभाग्य रमेशचंद जैन, आशीष जैन एवं पर्व जैन मुरानिया परिवार को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ मंगलोदय तीर्थ में निर्वाण लाडू चढ़ाने का प्रथम सौभाग्य श्रीमती मधु जैन एवं नमन जैन मुरानिया परिवार तथा द्वितीय सौभाग्य पवन कुमार, अमित जैन सेंकी एवं भारिल्ल परिवार को प्राप्त हुआ। धार्मिक आयोजन में समाज के पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई और भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना कर धर्मलाभ लिया।

विवेक विहार आदिनाथ मंदिर में भव्य चातुर्मास मंगल कलश स्थापना

आर्यिका सुविज्ञमति माताजी के 10वें वर्षायोग के लिए श्रद्धालुओं ने स्थापित किए पांच मुख्य सहित 100 से अधिक कलश

जयपुर. शाबाश इंडिया

विवेक विहार स्थित श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में श्रुतचंद्रिका आर्यिका श्री 105 सुविज्ञमति माताजी ससंघ के 10वें पावन वर्षायोग के लिए भव्य चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह आयोजित किया गया। समारोह में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चातुर्मास समिति संयोजक नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि पदमचंद-राजमती देवी पाटनी परिवार द्वारा चातुर्मास के ध्वजारोहण के बाद आर्यिका संघ का पांडाल में मयूर नृत्य के साथ भव्य प्रवेश हुआ। इसके बाद विकास-अंजना काला द्वारा आर्यिका सुविज्ञमति माताजी के पादप्रक्षालन किए गए। भारत के विभिन्न शहरों से आए श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक गुरु पूजन किया। आदिनाथ दिगंबर जैन महिला मंडल की सदस्यों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इसके पश्चात रमेश कुमार रौनक सराफ द्वारा संपूर्ण आर्यिका संघ को शास्त्र भेंट किए गए। चातुर्मास समिति संयोजक भागचंद पाटनी ने बताया कि समारोह में पांच मुख्य एवं 100 से अधिक श्रावक कलश स्थापित किए गए। मुख्य मंगल कलश, आचार्य सन्मति सागर कलश एवं आचार्य सुनील सागर कलश की स्थापना भागचंद, कांतादेवी, नितिन, समता, विपिन एवं मोना पाटनी द्वारा की गई। आचार्य आदि सागर कलश की स्थापना सुशील कुमार, विकास एवं अंजना काला द्वारा तथा आचार्य महावीर कीर्ति कलश की स्थापना रमेशचंद, मंजू देवी, रौनक, शिवानी, संदीप एवं आस्था सर्राफ परिवार द्वारा की गई। मंदिर अध्यक्ष अनिल जैन एवं मंदिर सचिव सुनील सरावगी ने बताया कि वर्षायोग के दौरान विवेक विहार दिगंबर जैन मंदिर में 16 दिवसीय अखंड शांति विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इसके साथ ही चातुर्मास के दौरान नियमित प्रवचन भी आयोजित किए जा रहे हैं। समिति संयोजक नरेश जैन मेड़ता ने बताया कि स्थापना समारोह में वर्षायोग समिति के सभी कार्यकारिणी सदस्य, मंदिर समिति के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे।

भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

जयकारों के साथ 11 किलो का निर्वाण लाडू चढ़ाया, 21 किलो दूध से भगवान का महामस्तकाभिषेक

टोंक. शाबाश इंडिया। पुरानी टोंक स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर श्याम बाबा में बुधवार को जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर परिसर भगवान पार्श्वनाथ के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। प्रवक्ता राजेश अरिहंत ने बताया कि मोक्ष सप्तमी के पावन अवसर पर प्रातः क्षीर सागर से जल लाकर विशाल श्यामवर्ण नौफणी भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक किया गया। इसके बाद घी, दूध, इक्षुरस, चंदन, केसर, नारियल पानी एवं सर्वौषधि आदि से भगवान का पंचामृत अभिषेक किया गया। 21 किलो दूध से भगवान का महामस्तकाभिषेक भी किया गया। इसके पश्चात विद्वान पंडित अंकित जैन शास्त्री, दमोह, मध्य प्रदेश के निर्देशन में ऋद्धि मंत्रों के उच्चारण के साथ 108 शांतिधाराएं कराई गईं। पुण्यार्जक परिवारों के नाम-वचन के साथ भगवान की वृहद शांतिधारा संपन्न हुई। शांतिधारा से प्राप्त गंधोदक को श्रद्धालुओं ने अपने मस्तक पर लगाकर भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर समिति के मंत्री पदम कासलीवाल ने बताया कि विशाल श्यामवर्ण नौफणी भगवान पार्श्वनाथ का प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य अनिल कुमार, नवीन कुमार, रमेशचंद एवं धर्मचंद जैन को प्राप्त हुआ। रजत पांडुशिला पर विराजमान भगवान शांतिनाथ की शांतिधारा का सौभाग्य रमेशचंद एवं पंकज कुमार छाबड़ा को मिला। 21 किलो दूध से महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य पदम कुमार एवं अतुल कुमार कासलीवाल को तथा संपूर्ण कलश से नौफणी भगवान पार्श्वनाथ का पंचामृत अभिषेक करने का सौभाग्य रतनलाल, संजय कुमार एवं अजय कुमार जैन सोगानी को प्राप्त हुआ। भगवान पार्श्वनाथ, भगवान आदिनाथ एवं भगवान शांतिनाथ की पूजा तथा नित्यनियम पूजन के बाद निर्वाण कांड का वाचन किया गया।

इसके साथ ही भगवान पार्श्वनाथ को 11 किलो का निर्वाण लाडू भक्तिभावपूर्वक अर्पित किया गया। इसके बाद खड्गासन पार्श्वनाथ स्वामी श्याम बाबा की वेदी, भगवान आदिनाथ की वेदी, भगवान महावीर स्वामी की वेदी, जिनवाणी माता की वेदी, पद्मावती माता की वेदी एवं क्षेत्रपाल बाबा की वेदी पर भी निर्वाण लाडू अर्पित किए गए। इस अवसर पर विक्रम जैन एडवोकेट, राकेश, नीरज, पदम, गुड्डू, निर्मल, अजीत, प्रदीप, मनोज, दिनेश, रिंकू, चेतन, अनिल, संजय, रीटा, मधु, रेखा, अंतिमा, रिंकू, शीला, राशि, प्रियंका, रचना, निशा, सीमा, कमला देवी सहित टोंक शहर की विभिन्न कॉलोनियों से बड़ी संख्या में जैन श्रद्धालु उपस्थित रहे। श्रद्धालुओं के जयकारों से पूरा मंदिर परिसर भक्तिमय हो गया। अजय सोगानी ने बताया कि शाम को भगवान पार्श्वनाथ की 1008 दीपकों से महाआरती की गई। इसके बाद भक्तामर परिवार, टोडारायसिंह द्वारा संगीतमय भक्तामर पाठ का आयोजन किया गया। ऋद्धि मंत्रों के उच्चारण के साथ 48 दीप प्रज्वलित कर भगवान के श्रीचरणों में समर्पित किए गए। रात्रि में विशाल भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें गायकों ने भजनों की प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। महिलाओं ने प्रभु भक्ति में नृत्य प्रस्तुत किए। छोटे बालक-बालिकाओं ने भी प्रभु भक्ति में उपवास रखा। मंदिर समिति की ओर से उपवास करने वाले सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

दुर्गापुरा में सामूहिक निर्वाण लाडू चढ़ाया, बच्चियों ने की पूजा

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर चंद्रप्रभजी ट्रस्ट, दुर्गापुरा के अध्यक्ष प्रकाशचंद चांदवाड़ एवं मंत्री राजेंद्र काला ने बताया कि दुर्गापुरा स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर चंद्रप्रभजी में भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर तीनों वेदियों में निर्वाण कांड का सामूहिक उच्चारण किया गया। इसके बाद श्रावकों ने भक्तिभावपूर्वक भगवान पार्श्वनाथ को सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू अर्पित किए। इसके पश्चात आचार्य विद्यासागर पाठशाला के सान्निध्य में विशेष पूजन का आयोजन किया गया। इसमें मोक्ष सप्तमी का उपवास करने वाली बच्चियों सहित अन्य बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। आचार्य विद्यासागर पाठशाला की संचालक श्रीमती चंदा सेठी ने बताया कि महावीर जी बाकलीवाल ने भजन एवं लयबद्ध तरीके से मनमोहक ढंग से पूजा संपन्न कराई। बच्चों ने भी उत्साह एवं भक्तिभाव के साथ पूजा में भाग लेकर धर्मलाभ लिया। इस दौरान बच्चों से भगवान पार्श्वनाथ के जीवन एवं उनके उपदेशों से संबंधित प्रश्नोत्तरी भी कराई गई। सही उत्तर देने वाले बच्चों का उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम में समाज की बहनों रेणु पांड्या, रेखा पाटनी, सुरबालाजी, मुन्ना सोगानी, शशि तोतुका, सुनीता, छवि सहित अन्य महिलाओं ने सक्रिय सहयोग दिया। विशेष अतिथि के रूप में बसंत बेराठी का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना कर मोक्ष कल्याणक का धर्मलाभ लिया।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

बापूनगर स्थित श्री पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में बुधवार को श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। प्रचार मंत्री प्रकाश पाटनी ने बताया कि प्रातः श्री पार्श्वनाथ भगवान एवं भगवान शांतिनाथ का महामस्तकाभिषेक किया गया। पूनम सेठी एवं लक्ष्मीकांत जैन ने श्री पार्श्वनाथ भगवान की तथा अशोक पाटोदी एवं चेतन अग्रवाल ने भगवान शांतिनाथ की शांतिधारा की। इसके पश्चात निर्वाण कांड का पाठ किया गया और श्री पार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से उत्साह एवं भक्तिभावपूर्वक निर्वाण लाडू अर्पित किया। भगवान पार्श्वनाथ की विशेष पूजा-अर्चना के बाद श्रावक-श्राविकाओं ने अर्घ्य समर्पित किए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में धर्मावलंबी उपस्थित रहे और भगवान पार्श्वनाथ की आराधना कर धर्मलाभ लिया।

प्रकाश पाटनीः प्रचार मंत्री, भीलवाड़ा

राजकीय महाविद्यालय रावतसर में छात्राओं के सशक्तिकरण की पहल

रानी लक्ष्मीबाई केंद्र बना आत्मनिर्भरता का मंच, महिला कांस्टेबलों ने दिया आत्मरक्षा प्रशिक्षण

रावतसर. शाबाश इंडिया

नरेश सिगची। राजकीय महाविद्यालय, रावतसर में छात्राओं के सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता एवं सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रानी लक्ष्मीबाई केंद्र का संचालन किया जा रहा है। केंद्र के माध्यम से महाविद्यालय की छात्राओं को शैक्षणिक, सामाजिक, आत्मरक्षा एवं व्यक्तित्व विकास से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है। रानी लक्ष्मीबाई केंद्र का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, आत्मरक्षा, जागरूकता एवं निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना है। इसके अंतर्गत छात्राओं को उनके अधिकारों, सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, करियर एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। साथ ही समय-समय पर जागरूकता कार्यक्रम एवं विभिन्न गतिविधियां आयोजित कर छात्राओं को अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। महाविद्यालय के प्राचार्य सुरेंद्र कुमार ने बताया कि रानी लक्ष्मीबाई केंद्र छात्राओं को अपनी प्रतिभा एवं क्षमताओं को निखारने के लिए सकारात्मक और सुरक्षित मंच प्रदान कर रहा है। केंद्र का उद्देश्य छात्राओं को समाज में सशक्त, जागरूक, आत्मविश्वासी एवं आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में आगे बढ़ने के लिए तैयार करना है। प्राचार्य ने कहा कि छात्राओं की सुरक्षा, शिक्षा एवं सशक्तिकरण महाविद्यालय की प्राथमिकताओं में शामिल हैं। भविष्य में भी रानी लक्ष्मीबाई केंद्र के माध्यम से छात्राओं के हित में विभिन्न प्रशिक्षण, जागरूकता एवं व्यक्तित्व विकास संबंधी कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने क्षेत्र की अन्य छात्राओं एवं महिलाओं से भी इस पहल से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण में शामिल होने की इच्छुक महिलाएं एवं छात्राएं आवश्यक दस्तावेजों के साथ राजकीय महाविद्यालय, रावतसर में संपर्क कर सकती हैं। रानी लक्ष्मीबाई केंद्र के अंतर्गत छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर भी सिखाए जा रहे हैं। रावतसर पुलिस थाने की महिला कांस्टेबल सुमन एवं इंद्रा देवी द्वारा छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान छात्राओं को विपरीत परिस्थितियों में स्वयं की सुरक्षा करने, सतर्क रहने तथा आत्मविश्वास के साथ परिस्थितियों का सामना करने के व्यावहारिक तरीके बताए जा रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान वीरेंद्र कुमार, प्रीति स्वामी, सुनील कुमार सहित महाविद्यालय की छात्राएं उपस्थित रहीं। छात्राओं ने आत्मरक्षा प्रशिक्षण में उत्साहपूर्वक भाग लिया और इसे अपने आत्मविश्वास एवं सुरक्षा की दृष्टि से उपयोगी पहल बताया।

भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

सेठी कॉलोनी में श्रद्धाभाव से चढ़ाया निर्वाण लाडू, गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री जिनदेवी माताजी के ससंघ सान्निध्य में हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री जिनदेवी माताजी ससंघ के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। अध्यक्ष दीनदयाल पाटनी, महामंत्री धर्मीचंद कासलीवाल एवं कोषाध्यक्ष राकेश मुशर्रफ ने बताया कि प्रातः भगवान का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। इसके बाद भगवान पार्श्वनाथ की विशेष पूजा-अर्चना की गई। पूजा के दौरान निर्वाण कांड भाषा का सामूहिक उच्चारण किया गया। तत्पश्चात मोक्ष कल्याणक श्लोक का उच्चारण करते हुए अर्घ्य समर्पित किया गया और भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से आत्मकल्याण की प्रेरणा

इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए गणिनी आर्यिका 105 श्री जिनदेवी माताजी ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन एवं उनके आध्यात्मिक संदेश पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी दिगंबर जैन परंपरा के 23वें तीर्थंकर हैं। उनका जीवन वैराग्य, तप, अहिंसा, क्षमा एवं आत्मसाधना का अत्यंत प्रेरणादायक उदाहरण है। माताजी ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी नगरी में इक्ष्वाकुवंश में हुआ था। उनके पिता राजा अश्वसेन एवं माता रानी वामादेवी थीं। उनका जन्म पौष कृष्ण एकादशी के दिन माना जाता है। उनका शरीर नीलवर्ण का था और उनका लांछन सर्प है। उन्होंने भगवान पार्श्वनाथ के पूर्वभवों का उल्लेख करते हुए कहा कि दिगंबर जैन ग्रंथों में उनके अनेक पूर्वभवों का वर्णन मिलता है। इन्हीं भवों के कर्म-संबंधों में कमठ के साथ उनके वैर का प्रसंग भी आता है।

जग्गा की बावड़ी में मनाया भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक

श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक चढ़ाया निर्वाण लाडू

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र, जग्गा की बावड़ी, जयपुर में बुधवार को श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस पर धार्मिक आयोजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः 9:30 बजे भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। मानद मंत्री सुनील बख्शी ने बताया कि इस अवसर पर पदम संघी, महेश जैन, श्रीमती अनीता टोंग्या, साधना गोदिका, महावीर कसेरा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ को भक्तिभावपूर्वक निर्वाण लाडू अर्पित किए। कार्यक्रम के अंत में भगवान की महाआरती की गई। श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ की आराधना कर धर्मलाभ लिया।

सुनील बख्शीः मानद मंत्री

भगवान पार्श्वनाथ के जयकारों से गुंजायमान हुए जैन मंदिर

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का 2878वां निर्वाणोत्सव मनाया, दिगंबर जैन मंदिरों में चढ़ाया निर्वाण लाडू

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का 2878वां निवाणोत्सव बुधवार, 19 अगस्त को जैन धर्मावलंबियों द्वारा श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर शहर के दिगंबर जैन मंदिरों में विश्व में सुख-शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना को लेकर पूजा-अर्चना के विशेष आयोजन हुए। पूजा के दौरान मंत्रोच्चार के साथ भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' के अनुसार प्रातः मंदिरों में भगवान पार्श्वनाथ के जयकारों एवं मंत्रोच्चार के साथ जलाभिषेक एवं पंचामृत अभिषेक किए गए। इसके बाद अष्टद्रव्य से भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना की गई। पूजा के दौरान 'पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा, दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा...' का सामूहिक उच्चारण किया गया। निर्वाण कांड भाषा के सामूहिक उच्चारण के बाद श्रद्धालुओं ने हाथों में मोक्ष के प्रतीक निर्वाण लाडू, अर्घ्य एवं दीपक लेकर जयकारों के बीच ह्रसित सावन साते आई, शिव नारि वरी जिनराई। सम्मेदाचल अरि माना, हम पूजे मोक्ष कल्याना...ह्व का सामूहिक उच्चारण करते हुए भगवान के समक्ष निर्वाण लाडू अर्पित किया। पंच परमेष्ठी एवं भगवान पार्श्वनाथ की आरती के साथ आयोजन का समापन हुआ।

नटाटा आमेर में चढ़ाया निर्वाण लाडू

श्री जैन के अनुसार नटाटा, आमेर स्थित श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में अध्यक्ष महेंद्र साह आबूजीवाले एवं महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा के नेतृत्व में मूलनायक अतिशयकारी भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। इसके बाद पूजा-अर्चना कर जयकारों के बीच निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इस अवसर पर महेंद्र साह, विनोद जैन कोटखावदा, माया साह, दीपिका जैन कोटखावदा, मिनिका बिलाला सहित अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

चित्रकूट कॉलोनी में सजाई सम्मेद शिखरजी की सजीव रचना

श्री जैन के अनुसार सांगानेर थाना सर्किल स्थित चित्रकूट कॉलोनी के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य विशद सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया। मंदिर अध्यक्ष अशोक जैन काशीपुरा एवं महामंत्री मूलचंद पाटनी ने बताया कि इस अवसर पर शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी की सजीव रचना सजाई गई। प्रातः 6:30 बजे से भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना शुरू हुई तथा प्रातः 8:15 बजे भगवान के जयकारों के बीच सवा 23 किलो का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इसके बाद आचार्य श्री के मंगल प्रवचन हुए, जिसमें उन्होंने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन एवं उनके आध्यात्मिक संदेश पर प्रकाश डाला।

विभिन्न मंदिरों में भी हुए धार्मिक आयोजन

श्री जैन के अनुसार गोलोक धाम, निमोड़िया में आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ससंघ, पदमपुरा के श्री साधु सेवा तीर्थ में आचार्य शशांक सागर महाराज ससंघ, दहमीकलां के श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य नवीन नंदी महाराज, जनकपुरी के श्री दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य आदित्य सागर महाराज ससंघ, भट्टारकजी की नसिया में उपाध्याय उर्जयंत सागर मुनिराज, मीरा मार्ग के आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मुनि विलोक सागर एवं मुनि विबोध सागर महाराज तथा मुहाना मंडी के पारस विहार स्थित चिंतामणि पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मुनि विश्व विजय सागर महाराज के सान्निध्य में विशेष धार्मिक आयोजन किए गए। मानसरोवर के वरुण पथ स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका 105 विभाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में भी श्री सम्मेद शिखरजी पर्वत की रचना सजाई गई। सम्मेद शिखरजी के स्वर्णभद्र कूट पर 23 किलो का निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। अन्य 25 टोंकों पर भी लाडू अर्पित किए गए। बीलवा के विमल परिसर स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका नंगमती माताजी ससंघ, सेठी कॉलोनी के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में गणिनीप्रमुख आर्यिका जिनदेवी माताजी ससंघ, कमला नेहरू नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी ससंघ, मुरलीपुरा के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका सुकाव्यमति माताजी ससंघ, मंगल विहार के श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका अर्हंश्री माताजी ससंघ, विवेक विहार के श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका सुविज्ञमति माताजी ससंघ तथा चौमूं स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका नंदीश्वरमति माताजी ससंघ के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

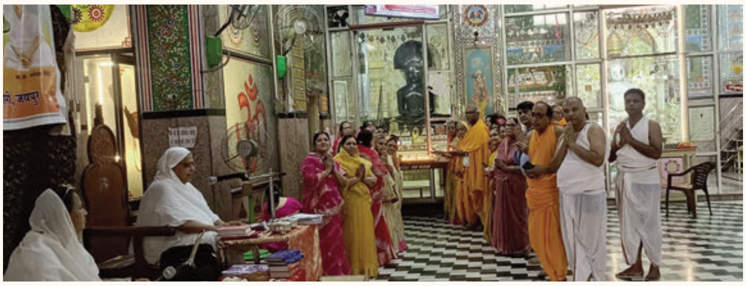

मोक्ष सप्तमी पर कुंवारी कन्याओं ने रखा उपवास

विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि जैन धर्म में इस पर्व को मुकुट सप्तमी अथवा मोक्ष सप्तमी भी कहा जाता है। इस अवसर पर कुंवारी कन्याओं ने मोक्ष सप्तमी का उपवास रखा। मान्यता के अनुसार इस व्रत में दिन में केवल एक बार पानी का सेवन किया जाता है और इसे सात वर्षों तक निरंतर किया जाता है। इसे विशेष फलदायी माना गया है। दिगंबर जैन संतों के चातुर्मास स्थलों पर भी शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी की झांकियां सजाई गईं तथा भगवान के मोक्षस्थल स्वर्णभद्र कूट पर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

सित सावन छट्ट अमन्दा... भक्ति भाव से मनाया भगवान नेमिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक दिवस

चौकड़ी मोदीखाना में निकली भगवान नेमिनाथ की भव्य शोभायात्रा

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक दिवस मंगलवार, 18 अगस्त को श्रद्धा एवं भक्ति भाव से मनाया गया। इस अवसर पर शहर के दिगंबर जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना के आयोजन हुए। चौकड़ी मोदीखाना क्षेत्र में भगवान नेमिनाथ की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इस दौरान जैन मंदिर भगवान नेमिनाथ के जयकारों से गुंजायमान हो उठे। वहीं, जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का 2878वां निवाणोत्सव बुधवार, 19 अगस्त को श्रद्धा एवं भक्ति भाव से मनाया जाएगा। इस अवसर पर शहर के दिगंबर जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना के साथ निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा। चातुर्मास स्थलों पर शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की सजीव झांकी सजाई जाएगी। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' के अनुसार, मंगलवार को मंदिरों में प्रातः भगवान नेमिनाथ के मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। इसके बाद विशेष पूजा-अर्चना की गई। पूजा के दौरान भगवान नेमिनाथ के जन्म कल्याणक के अवसर पर–

''सित सावन छट्ट अमन्दा, जन्में त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद महासुख पायो, हम पूजत विघ्न नशायो।।''

तथा तप कल्याणक के अवसर पर...

'तजि राजमती व्रत लीनों, सित सावन छट्ट प्रवीनों।
शिवनारि तबै हरषाई, हम पूजें पद शिरनाई।।'

का सामूहिक उच्चारण करते हुए अष्टद्रव्य के अर्घ्य समर्पित किए गए। महाआरती के साथ धार्मिक कार्यक्रम का समापन हुआ। श्री जैन के मुताबिक जनकपुरी स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य आदित्य सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में भगवान नेमिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव मनाया गया। बापूगांव स्थित श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र छोटा गिरनार में मूलनायक भगवान नेमिनाथ के अभिषेक एवं शांतिधारा के बाद विशेष पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान जन्म एवं तप कल्याणक के अर्घ्य समर्पित किए गए। बोरड़ी का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर लश्कर में प्रातः 7 बजे अभिषेक, शांतिधारा एवं नित्यनियम पूजा की गई। प्रातः 8:30 बजे मंदिर से चौकड़ी मोदीखाना के विभिन्न मार्गों से होते हुए भगवान नेमिनाथ की विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

भगवान नेमिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर नेमिनाथजी (सांवला जी), आमेर में मूलनायक भगवान 1008 श्री नेमिनाथजी का जन्म एवं तप कल्याणक दिवस श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मूलनायक भगवान श्री 1008 नेमिनाथजी का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। इसके बाद विधिवत पूजा-अर्चना कर जन्म एवं तप कल्याणक के अर्घ्य समर्पित किए गए। कार्यक्रम में दिगंबर जैन नेमिनाथजी (सांवला जी) ट्रस्ट के सदस्य पी.के. जैन, क्षेत्र की अन्य मंदिर समितियों के सदस्य योगेश टोडरका एवं प्रदीप ठोलिया सहित श्रीमती आशा जैन, धर्मचंद जैन एवं अन्य साधर्मी बंधु उपस्थित रहे।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा एवं लेंस प्रत्यारोपण तथा दंत चिकित्सा शिविर संपन्न

450 से अधिक रोगियों ने उठाया लाभ, 10 मरीज मोतियाबिंद ऑपरेशन एवं लेंस प्रत्यारोपण के लिए चयनित

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन युवा मंडल, सेक्टर-3, मालवीय नगर एवं कैलगिरी आई हॉस्पिटल, मालवीय नगर के संयुक्त तत्वावधान में जिला अंधता नियंत्रण सोसाइटी, जयपुर के सहयोग से आदर्श विद्या मंदिर, मालवीय नगर में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा एवं लेंस प्रत्यारोपण तथा दंत चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। प्रातः 9 बजे से आयोजित इस शिविर में 450 से अधिक रोगियों ने लाभ उठाया। शिविर के मुख्य संयोजक दिनेश पाटनी ने बताया कि शिविर का उद्घाटन कांग्रेस नेत्री डॉ. अर्चना शर्मा ने किया। भगवान महावीर के चित्र के समक्ष जतन कुमार-विद्या सेठी, रोहित-रेखा एवं आशीष-खुशबू सेठी परिवार ने दीप प्रज्वलित किया। शिविर के मुख्य अतिथि राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में संगिनी फोरम जेएसजी मेट्रो की संस्थापक अध्यक्ष दीपिका जैन कोटखावदा, अध्यक्ष रेखा पाटनी, पूर्व अध्यक्ष मैना गंगवाल एवं मुनिभक्त भागचंद पाटनी ने सहभागिता निभाई। कार्यक्रम के प्रारंभ में णमोकार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण किया गया। श्री नेमिनाथ युवा मंडल मालवीय नगर की ओर से दिनेश सुमन पाटनी, राजकुमार गोधा, रितेश गदिया, आशीष सेठी, सन्मति जैन, संजय बिलाला, संजय पाटनी, जितेंद्र जैन, संजय बाकलीवाल, सुरेंद्र पाटनी, दीपक जैन, राकेश हाडा, विकास जैन, आशीष जैन, गौरव पाटनी, किशोर, मीना ठोलिया, मधु, सरिता गोधा, निधि बडजात्या एवं प्रियंका बिलाला आदि ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया।

जैन संत भी देशभक्ति में अग्रणी, राष्ट्रहित में सेवा के लिए सदैव तत्पर

मीरामार्ग जैन मंदिर में स्वतंत्रता दिवस पर धर्मसभा आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मीरामार्ग, मानसरोवर स्थित आदिनाथ भवन में निर्यापक मुनि विलोक सागर महाराज एवं मुनि विबोध सागर महाराज का चातुर्मास श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ चल रहा है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मंदिर परिसर में अभिषेक, शांतिधारा एवं नित्यनियम पूजा के बाद धर्मसभा का आयोजन किया गया। समिति के उपाध्यक्ष जम्बू सोगानी ने बताया कि धर्मसभा को संबोधित करते हुए दोनों मुनिराजों ने कहा कि जब कभी राष्ट्र को जरूरत पड़ेगी, जैन साधु भी राष्ट्रहित में अपनी सेवाएं देने से पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा कि स्वच्छंदता ही स्वतंत्रता नहीं है। हमें राष्ट्र की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए देश के विकास और उन्नति के लिए निरंतर कार्य करते रहना चाहिए। कार्यक्रम के प्रारंभ में चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, शास्त्र भेंट, पाद प्रक्षालन एवं ध्वजारोहण का आयोजन किया गया। इन धार्मिक एवं राष्ट्रभक्ति से जुड़े कार्यक्रमों के लाभार्थी उत्तमचंद-पंकज बोहरा परिवार रहे। मंदिर समिति के अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेंद्र सेठी ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। मंच संचालन जम्बू सोगानी ने किया।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया, निर्वाण लाडू चढ़ाया

इंदौर. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक दिवस एवं मुकुट सप्तमी के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, जबरी बाग नसिया, इंदौर में श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ धार्मिक आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित किया। आयोजन में बड़ी संख्या में वरिष्ठ समाजजन एवं नसिया वाले पारस प्रभु के भक्त उपस्थित रहे। श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना कर धर्मलाभ लिया।

ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र नारेली के संत सुधासागर पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों को स्पोर्ट्स ड्रेस भेंट

अजमेर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर संभाग एवं श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग, अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र नारेली के भव्य प्रांगण में संचालित संत सुधासागर पब्लिक स्कूल के 175 विद्यार्थियों को स्पोर्ट्स ड्रेस भेंट की गई। समाजसेवी एवं समिति संरक्षक राकेश पालीवाल एवं कमलेश पालीवाल के सहयोग से विद्यार्थियों को स्पोर्ट्स ड्रेस प्रदान की गई। वहीं महासमिति सदस्य मनीष अजमेरा एवं आनंद नगर इकाई अध्यक्ष अंजू अजमेरा के सहयोग से विद्यार्थियों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महासमिति अध्यक्ष अतुल पाटनी ने कहा कि संत सुधासागर पब्लिक स्कूल में विद्यार्थी शिक्षा के साथ संस्कार भी ग्रहण कर रहे हैं। विद्यालय में विभिन्न खेल सुविधाओं से सुसज्जित खेल मैदान उपलब्ध है, जहां विद्यार्थी अपनी खेल प्रतिभाओं को निरंतर निखार रहे हैं। स्पोर्ट्स ड्रेस मिलने से विद्यार्थियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र प्रभारी ब्रह्मचारी भैया श्री सुकांत जैन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने अपने सारगर्भित उद्बोधन में विद्यार्थियों को शिक्षा, संस्कार एवं अनुशासन के साथ खेलों में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इससे पूर्व विद्या के मंदिर में पहुंचने पर तीर्थक्षेत्र महामंत्री अतुल ढिलवारी एवं विद्यालय की निदेशक रोमा ढिलवारी ने सभी आगंतुकों का आत्मीय स्वागत किया। उन्होंने राष्ट्रीय संत निर्यापक मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद से संचालित इस विद्या मंदिर की विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। महिला महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी के संयोजन में संपन्न हुए कार्यक्रम में अतुल पाटनी, राकेश पालीवाल, कमलेश पालीवाल, मनीष अजमेरा, अंजू अजमेरा, महेश पाटनी, सुषमा पाटनी, रेनू पाटनी सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने विद्यालय एवं खेल मैदान का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक वातावरण से परिपूर्ण यह विद्या का मंदिर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए श्रेष्ठ स्थान है। यहां शिक्षा के साथ संस्कार, अनुशासन एवं खेल प्रतिभाओं के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

पद्मविभूषण अमृतलाल नागर के जन्मदिवस पर युवा साहित्य चेतना मंच ट्रस्ट का गठन

शपथ ग्रहण समारोह एवं युवा कवि सम्मेलन का हुआ आयोजन

लखनऊ. शाबाश इंडिया। पद्मविभूषण अमृतलाल नागर के जन्मदिवस के अवसर पर सोमवार, 17 अगस्त 2026 को मुन्नूलाल धर्मशाला, चौक, लखनऊ में युवा साहित्य चेतना मंच ट्रस्ट के गठन एवं शपथ ग्रहण समारोह के साथ युवा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एमएलसी सीतापुर पवन सिंह चौहान, पार्षद चौक अनुराग मिश्रा 'अन्नू', पार्षद आचार्य नरेंद्र देव, मनीष रस्तोगी, वरिष्ठ भाजपा नेता अमित टंडन, युवा भाजपा नेता विनीत शुक्ला 'बीनू' एवं अतुल गुप्ता सहित अन्य अतिथियों ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए तथा कार्यकारिणी सदस्यों का सम्मान किया। इस अवसर पर आयोजित युवा कवि सम्मेलन में विभिन्न स्थानों से आए युवा कवियों ने अपनी रचनाओं का प्रभावशाली काव्य पाठ किया। कवि सम्मेलन में अनामिका वैश्य 'आईना' (सीतापुर), पूनम मिश्रा (अयोध्या), साक्षी मिश्रा (बाराबंकी), संजय मल्होत्रा 'हमनवा' (लखनऊ), संदीप अनुरागी, अजय प्रधान (बाराबंकी), संतोष यादव, हिमांशु लखनवी, कीर्ति तिवारी 'किट्टू' (बहराइच), अरविंद कुमार झा (लखनऊ), वर्षा श्रीवास्तव एवं खुशी भारद्वाज ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। कार्यक्रम का संचालन हास्य कवि अमित 'अनपढ़' एवं प्रीति सिंह 'प्रज्ञा' ने किया। कवियों की रचनाओं पर उपस्थित श्रोताओं ने उत्साहपूर्वक तालियों के साथ उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में साहित्य, संस्कृति एवं युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के साथ युवा साहित्यकारों को एक साझा मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य पर भी जोर दिया गया। समारोह में साहित्यप्रेमियों एवं गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही।

भगवान दास शर्मा 'प्रशांत', लखनऊ

रंगोलियों के माध्यम से दिया शत-प्रतिशत मतदान का संदेश

राजकीय कन्या महाविद्यालय लाडनूं में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

लाडनूं. शाबाश इंडिया। राजकीय कन्या महाविद्यालय, लाडनूं में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं ने आकर्षक एवं संदेशपरक रंगोलियां बनाकर आमजन को शत-प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोकतंत्र में मतदान के महत्व के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा प्रत्येक पात्र मतदाता को अपने मताधिकार का अनिवार्य रूप से प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एडीएम डीडवाना-कुचामन रतन कुमार स्वामी, विशिष्ट अतिथि उपखंड अधिकारी लाडनूं श्रीमती ममता लहुआ एवं उप-अधीक्षक पुलिस लाडनूं जितेंद्र सिंह चारण रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. गजादान चारण ने की, जबकि संयोजन प्रो. सुरेंद्र कागट ने किया। मुख्य अतिथि रतन कुमार स्वामी ने छात्राओं की रचनात्मक पहल की सराहना करते हुए कहा कि मतदान केवल हमारा अधिकार ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है। मतदान से ही हमारा लोकतंत्र मजबूत होगा। प्रत्येक पात्र मतदाता को बिना किसी प्रलोभन या दबाव के अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए लोकतंत्र के इस महापर्व में भागीदारी निभानी चाहिए। उन्होंने छात्राओं से स्वयं मतदान करने के साथ अपने परिवार एवं आसपास के लोगों को भी शत-प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। उपखंड अधिकारी श्रीमती ममता लहुआ ने कहा कि लोकतंत्र की सफलता जागरूक एवं जिम्मेदार मतदाताओं पर निर्भर करती है। उन्होंने छात्राओं द्वारा रंगोलियों के माध्यम से दिए गए मतदान जागरूकता संदेश की सराहना करते हुए कहा कि रचनात्मक माध्यमों से दिया गया संदेश समाज के प्रत्येक वर्ग तक सहजता से पहुंचता है। उन्होंने सभी से मतदान दिवस पर अपने मताधिकार का प्रयोग करने तथा अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करने की अपील की। उप-अधीक्षक पुलिस जितेंद्र सिंह चारण ने कहा कि मतदान लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला है। उन्होंने युवाओं को लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि प्रत्येक मत का अपना महत्व है। उन्होंने छात्राओं से अपने आसपास के मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने का आह्वान किया।

बैर बाँधकर कमठ न बनें, क्षमा धरकर पार्श्वनाथ अवश्य बनें: भावलिंगी संत

देहरा-तिजारा में मोक्ष सप्तमी का महापर्व श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाया, भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू समर्पित

देहरा-तिजारा. शाबाश इंडिया। अतिशय क्षेत्र देहरा-तिजारा में चल रहे 31वें पावन चातुर्मास के दौरान मोक्ष सप्तमी अर्थात मुकुट सप्तमी का महापर्व श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। परमपूज्य भावलिंगी संत दिगम्बराचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज के 31 पिच्छाधारी साधकों सहित संघ के सान्निध्य में श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक का भावपूर्वक स्मरण किया। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि मोक्ष सप्तमी के पावन अवसर पर प्रातः तिजारा स्थित प्राचीन श्री 1008 पार्श्वनाथ जिनालय में आचार्य श्री के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। इसके पश्चात देहरा जिनालय स्थित श्री चन्द्रतीर्थ मंडपम् में भगवान पार्श्वनाथ की महामंगलिक आराधना एवं निर्वाण लाडू समर्पण का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

क्षमा और संयम को जीवन में अपनाने का संदेश

श्री चन्द्रतीर्थ मंडपम् में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से क्षमा, संयम एवं वीतरागता की प्रेरणा लेने का संदेश दिया। उन्होंने कहा...

''बैर कभी मत रखना जी,
क्षमा भाव को रखना जी।
पार्श्वप्रभु सम बनने की,
अपना हृदय परखना जी।
जो बैर रखता, हो-हो-2,
वह बैर बढ़ाए रे।
जीवन है पानी की बूंद,
कब मिट जाए रे।''

आचार्य श्री ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का जीवन प्रत्येक मानव को सुखी एवं सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। भगवान पार्श्वनाथ ने उपसर्गों के बीच भी क्षमा और समता का मार्ग नहीं छोड़ा। उनके जीवन से यह शिक्षा मिलती है कि क्रोध और बैर मनुष्य के जीवन में अशांति एवं दुःख का कारण बनते हैं, जबकि क्षमा और संयम आत्मिक शांति की ओर ले जाते हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को अपने जीवन में सदैव क्षमाभाव धारण करना चाहिए। परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हों, क्रोध और बैर को जीवन में स्थान नहीं देना चाहिए। भगवान पार्श्वनाथ की वीतरागता एवं क्षमाशीलता से प्रेरणा लेकर प्रत्येक व्यक्ति को अपने हृदय को निर्मल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

श्रद्धालुओं ने लिया क्षमा और संयम का संकल्प

मोक्ष सप्तमी के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने धार्मिक आयोजनों में सहभागिता की और भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक को श्रद्धा एवं भक्तिभाव से मनाया। पूरे परिसर में धार्मिक वातावरण बना रहा तथा भगवान पार्श्वनाथ के जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन, महामंत्री नरेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष शिंभू जैन, प्रचार मंत्री उमंग जैन, चातुर्मास अध्यक्ष सुरेश जैन, अनिल जैन, राकेश जैन, पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र जैन एवं अंशुल जैन सहित समाज के अनेक पदाधिकारी, सदस्य एवं धर्मप्रेमी श्रद्धालु उपस्थित रहे। मोक्ष सप्तमी के इस पावन अवसर पर धर्मसभा ने यही संदेश दिया कि बैर जीवन को बांधता है, जबकि क्षमा आत्मा को मुक्त होने का मार्ग दिखाती है। भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से प्रेरणा लेकर क्रोध, बैर एवं वैमनस्य का त्याग कर क्षमा, संयम और शांति को जीवन में अपनाना ही इस महापर्व की सच्ची सार्थकता है।

समाज श्रेष्ठी श्रवण कुमार गोदिका के जन्मदिन पर स्वास्थ्य निधि आश्रम में कराया भोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

समाज श्रेष्ठी श्रवण कुमार गोदिका के 95वें जन्मदिवस, स्वतंत्रता दिवस एवं तीजोत्सव के सुअवसर पर 15 अगस्त को स्वास्थ्य निधि आश्रम में शाम के भोजन की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति की ओर से परम आदरणीय श्रवण कुमार गोदिका को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उनके चिरायु एवं स्वस्थ जीवन की मंगलकामना की गई। इस अवसर पर उनके पुत्र-पुत्रवधू सुनील- सुनीता, पौत्र-पौत्रवधू सौरभ-गरिमा एवं पड़पौत्री मिताशी भी उपस्थित रहे।

जैन धर्मावलंबियों ने मनाया भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस

लार में समाजजनों ने चढ़ाए निर्वाण लाडू, बालिकाओं ने किया निर्जला उपवास

लार, टीकमगढ़. शाबाश इंडिया। निकटवर्ती ग्राम लार में बुधवार को सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर समाजजनों ने भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू समर्पित किए। मान्यता के अनुसार श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन भगवान पार्श्वनाथ को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। इसलिए इस दिन को मोक्ष सप्तमी भी कहा जाता है। मोक्ष सप्तमी के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ जिनालय में जलाभिषेक, शांतिधारा एवं नित्यनियम पूजन के साथ भगवान पार्श्वनाथ का मस्तकाभिषेक किया गया। सौधर्म इंद्र के रूप में प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य राजेश जी एवं विकास जी, दिल्ली को तथा द्वितीय अभिषेक का सौभाग्य सेठ अरविंद जैन, लार को प्राप्त हुआ। जगत कल्याण की कामना से वृहद महाशांतिधारा करने का सौभाग्य राजेश जी एवं विकास जी, दिल्ली तथा अनिल जी जैन, सापोन परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं भगवान को निर्वाण लाडू समर्पित करने का अवसर करमोरा परिवार को प्राप्त हुआ। पंडित कमल कुमार शास्त्री एवं सुधांशु शास्त्री के कुशल निर्देशन में कल्याण मंदिर विधान का वाचन श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ किया। इस दौरान मंदिर परिसर भगवान पार्श्वनाथ के जयकारों से गुंजायमान रहा। मुकेश जैन ने बताया कि मोक्ष सप्तमी अर्थात मुकुट सप्तमी के अवसर पर जैन समाज की बालिकाएं सामूहिक रूप से निर्जला उपवास कर रही हैं। उपवास के दौरान दिनभर पूजन, स्वाध्याय, मनन-चिंतन एवं सामूहिक प्रतिक्रमण किया जाएगा। शाम को देव-शास्त्र-गुरु की सामूहिक भक्ति होगी। उपवास करने वाली बालिकाएं गुरुवार को प्रातः देवदर्शन के बाद पारणा करेंगी।

विज्ञा तीर्थ गुन्सी में भगवान नेमीनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया

निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज भारत एवं चातुर्मास कमेटी गुन्सी-विज्ञा तीर्थ के तत्वावधान में भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में भगवान नेमीनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भगवान नेमीनाथ की विधिवत पूजा-अर्चना कर निर्वाण लाडू अर्पित किया। विज्ञा तीर्थ गुन्सी के मीडिया प्रभारी विमल जौंला ने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व समाजसेवी महावीर प्रसाद पराणा, राजेश सांवलिया एवं पवन सांवलिया ने भगवान नेमीनाथ के समक्ष दीप प्रज्वलित कर धार्मिक कार्यक्रमों का शुभारंभ किया। इस दौरान मूलनायक भगवान शांतिनाथ एवं भगवान नेमीनाथ की महाशांतिधारा करने का सौभाग्य प्रेमचंद जैन, राजेश जैन, पवन सांवलिया, कवि चन्द्रेश जैन, दीपक कठमाणा, मोहित जैन, विमल पाटनी एवं पदम टोंग्या को प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय जैन धर्म प्रचारक विमल जौंला ने बताया कि धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान श्रद्धालुओं ने श्रीजी का अभिषेक कर विधिवत पूजन किया। देव-शास्त्र-गुरु, भगवान आदिनाथ, भगवान चंद्रप्रभु, भगवान शांतिनाथ, भगवान नेमीनाथ, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर स्वामी की मंत्रोच्चार के साथ अष्टद्रव्य से पूजा-अर्चना की गई। महिलाओं ने गणाचार्य विराग सागर महाराज एवं भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी की उपस्थिति में श्रीफल अर्पित कर पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने आर्यिका संघ से आशीर्वाद लिया।

मुकुट सप्तमी पर्व पर शांतिधारा, पूजा-विधान एवं निर्वाण लाडू चढ़ाया

भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्तिभाव से मनाया

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। 1008 भगवान महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, डीडवाना रोड पर मुकुट सप्तमी के पावन अवसर पर उपसर्ग विजेता भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ हर्षोल्लास एवं भक्तिभाव से मनाया गया। जैन धर्म में भगवान पार्श्वनाथ का जीवन वैराग्य, तप, अहिंसा, क्षमा एवं आत्म-साधना का प्रेरणादायक उदाहरण है। केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात उन्होंने जीवों को आत्मकल्याण का मार्ग बताया। उनके उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य एवं अपरिग्रह का विशेष महत्व रहा। भगवान ने संसार के बंधनों से मुक्ति का मार्ग बताते हुए रत्नत्रय–सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चरित्र को मोक्षमार्ग का आधार बताया। भगवान पार्श्वनाथ ने शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखरजी से निर्वाण प्राप्त किया। प्रातः 6:15 बजे 21 श्रावकों एवं निराहार उपवास रखकर धर्मध्यान करने वाले 8 बालकों द्वारा भगवान पार्श्वनाथ का जलाभिषेक किया गया। इसके पश्चात विश्व में अमन-शांति की कामना से भगवान पार्श्वनाथ की शांतिधारा कर बहुमान किया गया। पूजा एवं विधान के बाद भगवान के मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष्य में श्रद्धा एवं भक्तिभाव से निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। जैन धर्म में इस पर्व के विशेष महत्व को देखते हुए कुचामन में जैन समाज के 71 बालक-बालिकाओं ने उपवास रखकर पूजा-पाठ एवं धर्मध्यान किया। अध्यक्ष लालचंद पहाड़िया ने बताया कि सभी श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से पूजा एवं कल्याण स्तोत्र विधान किया तथा भगवान को निर्वाण लाडू अर्पित किया। सायंकाल श्रीजी की भव्य आरती का आयोजन किया गया। बालक-बालिकाओं को पूजा-विधान अमित पाटोदी, कुचामन तथा रीता गंगवाल, किशनगढ़ ने भक्तिभाव से कराया।

— सुभाष पहाड़िया

भगवान पार्श्वनाथ की वेदी पर भक्तिभाव से चढ़ाया निर्वाण लाडू

एसएफएस राजावत फार्म स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में मुकुट सप्तमी पर हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, एसएफएस राजावत फार्म, मानसरोवर में मुकुट सप्तमी के पावन अवसर पर भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भगवान पार्श्वनाथ की वेदी पर सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। महामंत्री सौभागमल जैन ने बताया कि प्रातः 6:30 बजे नित्यनियम अभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन किया गया। शांतिधारा करने का सौभाग्य पुण्यार्जक परिवार नवीन जी एवं यीशु जी गोदिका तथा नीरज जी एवं श्वेता जी अजमेरा को प्राप्त हुआ। शांतिधारा के पश्चात अष्टद्रव्य से भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना की गई। स्वाध्याय मंडल के अध्यक्ष कैलाश चंद जैन, कमल जी टोंग्या एवं सुनील बज ने मधुर स्वर में भक्तिभाव के साथ पूजन कराया। निर्वाण कांड के पाठ के साथ श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लाडू अर्पित किया। स्वाध्याय मंडल के अध्यक्ष कमलेश चंद जैन ने बताया कि मुकुट सप्तमी का पर्व प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल सप्तमी को भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर अनेक महिलाएं एवं बालिकाएं व्रत करती हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार अविवाहित महिलाएं श्रद्धा एवं भक्तिभाव से इस व्रत को 7 वर्षों तक करती हैं। उन्होंने बताया कि यह व्रत निर्जल अथवा दिन में एक बार जल ग्रहण करके किया जाता है। आचार्य बसुनंदी जी के अनुसार मुकुट सप्तमी का पर्व भगवान पार्श्वनाथ के मोक्षमार्ग एवं उनकी महान साधना की प्रेरणा का प्रतीक है। यह दिवस हमें त्याग, तप, संयम और समता के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

"कुर्सी से नहीं, व्यक्तित्व से बनता है नंबर एक" : मुनि सुधासागर जी

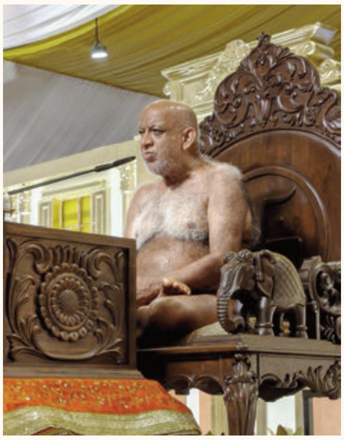

राजेश जैन दद्दू

इंदौर. शाबाश इंडिया दलालबाग स्थित देशना मंडप में चातुर्मास के दौरान विराजित श्रमण निर्यापक मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज ने धर्मसभा में भगवान पार्श्वनाथ के व्यक्तित्व को प्रेरणा का स्रोत बताते हुए कहा कि ''नंबर मत खोजिए, अपना चरित्र और क्षमता खोजिए।'' मुनि श्री ने अपनी मंगल देशना में ''व्यक्तित्व की महानता'' विषय पर प्रेरणादायक विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''कुर्सी से नहीं, व्यक्तित्व से बनता है नंबर एक।'' धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि मुनि श्री ने कल्याण के मार्ग और उपलब्धि के सुख पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कल्याण करना बहुत सरल है। मोक्षमार्ग पर चलने वाला जीव जब अपनी उपलब्धि को सामने देखता है तो बड़े से बड़े कष्ट भी उसे छोटे लगने लगते हैं। जब हमें किसी उपलब्धि का सुख दिखाई देता है, तो उसकी तुलना में कष्टों की परवाह नहीं रहती।

पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व बना प्रेरणा

गुरुदेव ने भगवान पार्श्वनाथ का उदाहरण देते हुए कहा कि अनंत-अनंत जीवों ने आत्मकल्याण किया, लेकिन सभी के कल्याणक नहीं मनाए गए। असंख्यात जीवों में से केवल 24 तीर्थंकरों के कल्याणक मनाए जाते हैं। इन 24 तीर्थंकरों में भी भगवान पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व ऐसा बना कि आज वे करोड़ों भक्तों के हृदय में विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने कहा कि यही सबसे बड़ी प्रेरणा है कि अपना नंबर मत देखिए, अपना व्यक्तित्व बनाइए। मुनि श्री ने कहा कि महान आत्माएं किसी एक नंबर की कुर्सी की मोहताज नहीं होतीं। वे जिस स्थान पर बैठ जाती हैं, वही स्थान महत्वपूर्ण और प्रथम बन जाता है। उन्होंने कहा कि हमें बार-बार यह जानने की चिंता रहती है कि हमारा नंबर क्या है और हमें कौन-सी कुर्सी मिली। यही हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। गुरुदेव ने सूत्र देते हुए कहा, ''आप ऐसा व्यक्तित्व बनाइए कि आप 24वें नंबर पर भी बैठें तो लोगों की नजरें आपकी ओर हों और सारे कैमरे आपकी तरफ मुड़ जाएं।''

मुकुट सप्तमी पर मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। महल योजना स्थित श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का पावन मोक्ष कल्याणक महोत्सव (मुकुट सप्तमी) धार्मिक उत्साह, भक्तिभाव एवं गरिमा के साथ मनाया गया। समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया कि प्रातःकाल से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का आना शुरू हो गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीजी के अभिषेक एवं विश्वशांति की कामना के साथ वृहद शांतिधारा से हुआ। भगवान पार्श्वनाथ के जयकारों से मंदिर परिसर भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालुओं ने विधि-विधानपूर्वक अष्टद्रव्य से भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना की तथा उनके गुणों का गुणगान किया। इसके पश्चात श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। साथ ही मोक्ष सप्तमी का तप एवं उपवास कर रही बालिकाओं की भावपूर्ण अनुमोदना की गई। इस मांगलिक अवसर पर निर्मला मुकेश संघी, शिव पिंकल श्रीमाल, अनूप सुलोचना, मैना गंगवाल, धीरेंद्र, हेमंत, राकेश, भागचंद कनक सहित जैन समाज के अनेक गणमान्यजन एवं मंदिर कार्यकारिणी के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पार्श्व प्रभु निर्वाण दिवस पर भीलवाड़ा की धरा पर इंद्रलोक सा नजारा, सम्मेद शिखर तीर्थ की जीवंत रचना

आचार्य पुलकसागर के सानिध्य में श्रद्धा, भक्ति और जैन संस्कृति की त्रिवेणी बना भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक महोत्सव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक दिवस 'मोक्ष सप्तमी' पर राष्ट्र संत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में भीलवाड़ा की धरा पर भव्य मंगल रथयात्रा का आयोजन किया गया। रथयात्रा में इंद्रलोक जैसा नजारा दिखाई दिया। कार्यक्रम स्थल चित्रकूटधाम में भगवान पार्श्वनाथ सहित कई जैन तीर्थंकरों की पावन निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर महातीर्थ की अद्भुत जीवंत रचना ने श्रद्धालुओं को भक्ति से सराबोर कर दिया। संघपति पाटनी परिवार के साथ आचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ एवं सौधर्म इंद्र ने सम्मेद शिखर तीर्थ की वंदना की। सकल दिगंबर जैन समाज एवं श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के तत्वावधान में सूर्यमहल से मंगल रथयात्रा प्रारंभ हुई। रथयात्रा में शामिल होने के लिए शास्त्रीनगर स्थित पार्श्वनाथ मंदिर से श्रीजी भगवान को रथ में विराजमान कर लाया गया। बैंडबाजों की मधुर स्वर लहरियों के साथ आचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में निकली रथयात्रा में मुख्य आकर्षण उत्तर प्रदेश के बड़ौत से आए पांच ऐरावत हाथी रहे, जिन पर सौधर्म इंद्र-इंद्राणी सवार थे। महिला मंडल की सदस्याएं सबसे आगे विशाल ध्वज-पताका लेकर चल रही थीं। श्रीजी के रथ के आगे विशेष रूप से सुसज्जित 10 हाथी रथ चल रहे थे। भगवान पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र एवं विभिन्न प्रसंगों को मंचित करने वाली सात विशेष झांकियां भी आकर्षण का केंद्र रहीं। रथयात्रा में सौधर्म इंद्र-इंद्राणी बग्गियों में सवार थे। ध्वज, डोली, ढोल एवं मंजीरे लेकर चल रही दिगंबर जैन समाज की विभिन्न महिला मंडलों की श्राविकाओं ने तीर्थंकर भक्ति का अद्भुत नजारा प्रस्तुत किया। रथयात्रा में सम्मेद शिखर तीर्थयात्रा का सजीव दृश्य साकार हो रहा था। रथयात्रा को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति के लिए भीलवाड़ा की धरा पर साक्षात इंद्रलोक उतर आया हो। रथयात्रा बड़ला चौराहा, राजीव गांधी सर्किल एवं नेताजी सुभाष मार्केट होते हुए कार्यक्रम स्थल चित्रकूटधाम पहुंची। मार्ग में जगह-जगह शहरवासी इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़े। रथयात्रा चित्रकूटधाम पहुंची, जहां आचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में चिंतामणि पार्श्वनाथ का दरबार सजा। मंच पर 40 फीट लंबी और 12 फीट ऊंची सम्मेद शिखर की विशाल जीवंत झांकी श्रद्धा एवं आस्था का केंद्र बन गई।

पार्श्वनाथ भगवान को चढ़ाया निर्वाण लड्डू

पारस विहार में हुआ भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, पारस विहार, मुहाना मंडी में परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज एवं पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, परम पूज्य सरल स्वभावी संत मुनि श्री विश्वविजय सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में 23वें तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथ जी का मोक्ष कल्याणक महापर्व श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ धूमधाम से मनाया गया। ट्रस्ट अध्यक्ष पवन जैन गोदिका ने बताया कि इस अवसर पर प्रातःकालीन अभिषेक-पूजन के पश्चात मुनि श्री विश्वविजय सागर जी महाराज के सान्निध्य में शांतिधारा की गई। शांतिधारा के पुण्यार्जक राकेश-समता गोदिका, अशोक-निखिल सेठी, पवन-सरोज, प्रतीक-रुचि, आध्या, मानवी गोदिका एवं ऋषभ लुहाड़िया रहे। मंत्री प्रमोद बाकलीवाल ने बताया कि भगवान श्री पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष्य में श्रद्धा एवं भक्तिभाव से निर्वाण कांड का वाचन करते हुए निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया। इस पावन अवसर के पुण्यार्जक श्रेष्ठीश्री अशोक-निखिल सेठी एवं राकेश-समता गोदिका रहे। कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक भगवान श्री पार्श्वनाथ के समक्ष निर्वाण लड्डू अर्पित कर पुण्यार्जन किया। इस अवसर पर जयपुर जैन समाज के श्रद्धालुओं सहित आसपास की कॉलोनियों के निवासी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सकल दिगम्बर जैन समाज ने मनाया पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक महोत्सव

किशनगढ़ में पहली बार एक साथ निकली 23 पालकियों और रथ की शोभायात्रा, अजमेर जिले में पहली बार बनाई गई श्री सम्मेद शिखरजी की भव्य रचना

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

धर्मनगरी किशनगढ़ में सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से देवाधिदेव 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव और भव्यता के साथ मनाया गया। आयोजन आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर किशनगढ़ में पहली बार 23 जिनेन्द्र भगवान की पालकियों एवं रथ की शोभायात्रा एक साथ निकाली गई। वहीं अजमेर जिले में पहली बार श्री सम्मेद शिखरजी की भव्य रचना तैयार की गई। महोत्सव का शुभारंभ श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान के समक्ष निर्वाण लड्डू अर्पित करने के साथ हुआ। निर्वाण लड्डू चढ़ाने का सौभाग्य श्री जयकुमारजी, राजकुमारजी एवं मुकेशकुमारजी बैद परिवार (ऊटड़ा वाले) को प्राप्त हुआ। इसके बाद 23 जिनेन्द्र भगवान की पालकियों एवं भव्य रथ की शोभायात्रा निकाली गई। रथ में श्री पार्श्वनाथ भगवान को विराजमान करने का सौभाग्य श्री भागचंदजी, विमलचंदजी, प्रकाशचंदजी, अशोककुमारजी, राजकुमारजी एवं मनोजजी बोहरा परिवार को प्राप्त हुआ। रथ में सारथी, खजांची एवं चंवर करने का सौभाग्य श्री मोतीलालजी एवं नरेशकुमारजी गंगवाल परिवार (छोटा लाम्बा) को मिला। शोभायात्रा में 23 जिनेन्द्र प्रभुओं की पालकियां श्रद्धा और भक्ति के साथ शामिल हुईं। विभिन्न परिवारों ने जिनेन्द्र प्रभुओं की पालकियां लेकर चलने का पुण्यार्जन किया।

पालकी लेकर चलने वाले परिवारों का विवरण इस प्रकार रहा...

श्री आदिनाथ भगवान – श्री मांगीलालजी, चिरंजीलालजी, रोहितजी एवं मोहितजी झांझरी।
श्री अजीतनाथ भगवान – श्री महावीरप्रसादजी, प्रदीपजी, दिलीपजी एवं संदीपजी गंगवाल (रूपनगढ़ वाले)।
श्री संभवनाथ भगवान – श्री राजकुमारजी, जयकुमारजी, निर्मलजी एवं प्रदीपजी दोसी।
श्री अभिनंदन भगवान – श्री ओमप्रकाशजी एवं मोहितजी गदिया।
श्री सुमतिनाथ भगवान – श्रीमती शकुंतलाजी, रमेशचंदजी एवं जीतेन्द्रजी छाबड़ा।
श्री पद्मप्रभु भगवान – श्री दिनेशजी झांझरी।
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान – श्री दिलीपजी, अशोकजी एवं सुभाषजी बड़जात्या (साली वाले)।
श्री चंद्रप्रभु भगवान – श्री अनिलजी सोगानी (अरांई वाले)।
श्री पुष्पदंतनाथ भगवान – श्रीमती प्रेमदेवी, मुन्नीदेवी एवं उमरावदेवी सोगानी।
श्री शीतलनाथ भगवान – श्री शैलेशजी गंगवाल (फुलेरा वाले)।
श्री श्रेयांशनाथ भगवान – श्री प्रकाशचंदजी एवं प्रदीपजी पापड़ीवाल।
श्री वासुपूज्य भगवान – श्रीमती रामज्योति, अनिलजी एवं मुकेशजी सेठी।
श्री विमलनाथ भगवान – श्री राजकुमारजी, जयकुमारजी एवं मुकेशजी बैद।
श्री अनंतनाथ भगवान – श्री पदमचंदजी एवं प्रतीकजी गंगवाल (आसलपुर वाले)।
श्री धर्मनाथ भगवान – श्री पवनजी पाटनी (कालू वाले)।
श्री शांतिनाथ भगवान – श्री राजेश भैया ब्र.
श्री कुंथुनाथ भगवान – श्री विनोदकुमारजी, सचिनजी, गौरवजी एवं अध्विकजी अजमेरा (रूपनगढ़ वाले)।
श्री अरहनाथ भगवान – श्री विमलप्रकाशजी एवं कमलप्रकाशजी बैद।
श्री मल्लिनाथ भगवान – श्री प्रदीपकुमारजी एवं पीयूषजी गंगवाल।
श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान – श्री विजयजी एवं अक्षयजी गंगवाल।
श्री नमिनाथ भगवान – श्री राहुलजी एवं संयमजी पाटोदी।
श्री नेमिनाथ भगवान – श्री सुनीलजी एवं अंकितजी गदिया।
श्री पार्श्वनाथ भगवान – श्री भागचंदजी, विमलचंदजी, प्रकाशजी, अशोकजी, राजकुमारजी एवं मनोजजी बोहरा।
श्री महावीर स्वामी – श्री सुरेशकुमारजी, राजीवजी एवं राकेशजी पाटोदी (कुचामन)।

भव्य शोभायात्रा मुख्य चौराहा होते हुए पुरानी मिल से आर.के. कम्युनिटी सेंटर पहुंची। यहां सर्वप्रथम ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण का सौभाग्य श्री राजकुमारजी, जयकुमारजी, निर्मलजी एवं प्रदीपजी दोसी परिवार (हरसोली वाले) को प्राप्त हुआ। ध्वजारोहण में श्रीमती सुशीलाजी पाटनी एवं श्रीमती शांताजी पाटनी भी सहभागी बनीं। इसके बाद श्री सम्मेद शिखरजी की भव्य रचना का अनावरण किया गया। अनावरण का सौभाग्य श्रीमती शांतिदेवी, विमलकुमारजी, प्रेमचंदजी, अक्षतजी एवं दिव्यांशजी बड़जात्या परिवार (मरवा वाले) को प्राप्त हुआ। श्री सम्मेद शिखरजी की भव्य रचना पर श्री पार्श्वनाथ भगवान को विराजमान करने एवं निर्माण लड्डू अर्पित करने का सौभाग्य भामाशाह श्री अशोकजी पाटनी के साथ श्री भागचंदजी, विमलचंदजी, प्रकाशचंदजी, अशोककुमारजी, राजकुमारजी एवं मनोजकुमारजी बोहरा परिवार को प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन का पुण्यार्जन भी इन्हीं परिवारों को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में 24 जिनेन्द्र प्रभुओं का अभिषेक एवं शांतिधारा श्रद्धापूर्वक संपन्न हुई। आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज के मुखारविंद से अभिषेक एवं शांतिधारा का पुण्यार्जन हुआ। सभी पालकी लेकर चलने वाले परिवारों ने श्री पार्श्वनाथ भगवान को निर्वाण लड्डू अर्पित किए तथा विधि-विधानपूर्वक पूजन किया। अंत में आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज ने उपस्थित श्रद्धालुओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूरे आयोजन के दौरान श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक उल्लास का वातावरण बना रहा। सकल दिगम्बर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर महोत्सव को सफल एवं ऐतिहासिक बनाया।

अयोध्या में भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक पर चढ़ाया गया निर्वाण लड्डू : विजय कुमार जैन

अयोध्या. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन मंदिर रायगंज, अयोध्या में जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक के अवसर पर सुदूर प्रांतों से आए श्रद्धालुओं ने निर्वाण लड्डू अर्पित कर विधि-विधानपूर्वक पूजा-अर्चना की। भगवान पार्श्वनाथ ने झारखंड स्थित सम्मेद शिखरजी की पावन धरा पर स्वर्णभद्र कूट से निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया था। आज भी देशभर से लाखों श्रद्धालु सम्मेद शिखरजी की यात्रा कर भगवान के चरणों में निर्वाण लड्डू अर्पित करने का पुण्यार्जन करते हैं। अयोध्या में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में सम्मेद शिखरजी की भव्य रचना तैयार की गई। इस अवसर पर निर्वाणकांड का वाचन कर भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में निर्वाण लड्डू अर्पित किए गए। यह पुण्यार्जन प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय कुमार जैन को प्राप्त हुआ। प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय कुमार जैन ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ क्षमा के अवतार थे। आज पूरे भारतवर्ष में भगवान पार्श्वनाथ के सर्वाधिक मंदिर पाए जाते हैं, जहां प्रतिदिन श्रद्धालु पूजा-अर्चना कर भगवान का स्मरण करते हैं। इस अवसर पर जैन मंदिर के मंत्री श्री विजय कुमार जैन का जन्मदिवस भी मनाया गया। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने उन्हें ग्रंथ प्रदान कर आशीर्वाद दिया। जैन मंदिर धर्मतीर्थ के पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने तिलक एवं माल्यार्पण कर जन्मदिवस की शुभकामनाएं दीं। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने प्रतीक चिह्न प्रदान कर आशीर्वाद दिया। मंदिर समिति की ओर से डॉ. जीवन प्रकाश जैन एवं मंदिर के कार्यकताओं ने भी उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने मंत्रोच्चारणपूर्वक भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लड्डू समर्पित करवाया।

"लहरिया तो ला दो म्हारा साहिबा" और "ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तू" की मनमोहक प्रस्तुति

जयपुर. शाबाश इंडिया

विकल्प नाट्य संगठन की ओर से जवाहर कला केंद्र में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में नृत्य एवं संगीत की संध्या ''एक शाम वतन के नाम'' प्रस्तुत की गई। सांस्कृतिक संध्या में देशभक्ति गीतों और नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से कलाकारों ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। मीरा सक्सेना के निर्देशन में उमा गौतम, अलका अग्रवाल, अलका गर्ग, आशा वर्मा, डॉ. उर्मिला जेठानी, सोनम जैन, संतोष मीना, डॉ. कुसुम कौशिक, डॉ. रश्मि गोगर, करुणा सरोजा, अंजू रावत, हेमलता यादव, शालिनी अगरोइया, अनुरेखा गुप्ता, भावना जलुथरिया और पुलकित प्रभव ने विभिन्न गीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियां दीं। जगजीत सिंह की गजल तेरे हरम में बसने वालों की पर कलाकारों की सुंदर नृत्य प्रस्तुति ने दर्शकों का दिल जीत लिया। इसके अलावा लहरिया तो ला दो म्हारा साहिबा, ऐ वतन, वतन मेरे आबाद रहे तू और देशभक्ति गीत तलवारों पर सर वार दिए पर कलाकारों ने शानदार एवं प्रभावशाली नृत्य प्रस्तुतियां देकर माहौल को देशभक्ति से सराबोर कर दिया। सांस्कृतिक संध्या में भारती शर्मा ने ऐ मालिक तेरे बंदे हम तथा ओम गोस्वामी ने जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा गीत प्रस्तुत किया। वहीं मनमोहन सिंह रावत, केशव तैलंग, प्रमोद गोस्वामी और पप्पू सिंह ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीतों की प्रस्तुति देकर सभागार में देशभक्ति का माहौल पैदा कर दिया। कार्यक्रम के शुभारंभ पर मोहनलाल गोयल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। अंत में महासचिव भगवान कृपलानी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन गौरव शर्मा ने किया, जबकि प्रकाश व्यवस्था राजेंद्र शर्मा राजू की रही।

दुर्गापुरा गौशाला में स्वच्छता एक्शन प्लान के तहत स्वयंसेवकों ने किया श्रमदान

जयपुर. शाबाश इंडिया

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, राष्ट्रीय सेवा योजना तथा एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय (स्वायत्त), जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को दुर्गापुरा स्थित गौशाला में स्वच्छता एक्शन प्लान कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने गौशाला परिसर में श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सेवा योजना, नई दिल्ली के निदेशक श्री रमेश वर्मा, आईएएस थे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना, राजस्थान के राज्य संपर्क अधिकारी डॉ. नरेंद्र गुप्ता तथा राष्ट्रीय सेवा योजना, जयपुर की युवा अधिकारी सुश्री करिश्मा टांक विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी ने कहा कि स्वच्छता एक सामूहिक जिम्मेदारी है। विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्व की भावना विकसित करने में ऐसे कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने महाविद्यालय की ओर से गोद ली गई दुर्गापुरा गौशाला में स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान स्वयंसेवकों ने गौशाला परिसर में श्रमदान करते हुए 80 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक एवं अन्य वेस्ट सामग्री एकत्रित की। साथ ही गौशाला परिसर में पौधारोपण भी किया गया। मुख्य अतिथि श्री रमेश वर्मा ने कहा कि स्वच्छता केवल किसी एक विभाग या संस्था की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने स्वयंसेवकों के श्रमदान की सराहना करते हुए कहा कि युवाओं की सक्रिय भागीदारी से स्वच्छ और स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। डॉ. नरेंद्र गुप्ता ने कहा कि स्वच्छता को केवल अभियान तक सीमित न रखकर इसे दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना आवश्यक है। उन्होंने स्वयंसेवकों से आह्वान किया कि वे अपने आसपास स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाएं तथा प्लास्टिक और अन्य अपशिष्ट पदार्थों के उचित निस्तारण के लिए लोगों को प्रेरित करें। कार्यक्रम में डॉ. अनंत विजया सोनी, डॉ. विशाल गौतम, डॉ. मुकेश शर्मा, डॉ. राकेश धाबाई सहित बड़ी संख्या में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने सक्रिय सहभागिता की।

आचार्य विशद सागर के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ को 23 किलो का निर्वाण लड्डू अर्पित

भगवान पार्श्वनाथ से सीखें संकट में धैर्य रखना : आचार्य विशद सागर

मुनि संघ के साथ 23 बालिकाओं ने भी रखा उपवास

जयपुर. शाबाश इंडिया

सांगानेर स्थित चित्रकूट कॉलोनी के महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में चातुर्मासरत आचार्य 108 श्री विशद सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में बुधवार को जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर भक्तिभाव से 23 किलो का निर्वाण लड्डू अर्पित कर पूजा-अर्चना की गई। मंदिर समिति के अध्यक्ष अनिल जैन काशीपुरा एवं मंत्री मूलचंद पाटनी ने बताया कि प्रातःकाल भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा का दूध, दही, घी, बूरा, चंदन एवं फलों के रस से पंचामृत अभिषेक किया गया। इसके बाद गुलाब के फूलों से पुष्पवृष्टि की गई। मुनि श्री विशाल सागर जी के मुखारविंद से साज-बाज के साथ भगवान पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना कराई गई। श्रद्धालुओं ने आत्मकल्याण एवं मोक्ष प्राप्ति की भावना के साथ अष्टद्रव्य अर्पित किए। समाजश्रेष्ठी जितेंद्र दोसी परिवार की ओर से भगवान के समक्ष 23 किलो का निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया, जबकि सत्यनारायण मित्तल परिवार की ओर से शांतिधारा की गई। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने भजनों के साथ नृत्य करते हुए भक्ति भाव से भगवान की पूजा-अर्चना की। समाजबंधुओं की ओर से आचार्य विशद सागर महाराज के सान्निध्य में 23 निर्वाण लड्डू भी अर्पित किए गए। इस अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का जीवन आध्यात्मिक ज्ञान और वैराग्य का प्रतीक है। भगवान पार्श्वनाथ पर घोर उपसर्ग होने के बावजूद वे ध्यान और तप से विचलित नहीं हुए तथा घातिया कर्मों का नाश कर मोक्ष को प्राप्त हुए। उन्होंने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से हमें शिक्षा मिलती है कि संकट आने पर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि धैर्य के साथ उसका सामना करना चाहिए। जो व्यक्ति जीवन में धैर्य बनाए रखते हैं, वे बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। मोक्ष सप्तमी पर निर्वाण लड्डू अर्पित करने के महत्व पर उन्होंने कहा कि यह भगवान के निर्वाण कल्याणक के प्रति श्रद्धा एवं आत्मकल्याण की भावना का प्रतीक है। भगवान की पूजा-अर्चना से विनय भाव बढ़ता है और विनय मोक्षमार्ग की महत्वपूर्ण भावना है। भगवान पार्श्वनाथ आत्मसंयम और धैर्य के प्रतीक हैं।

23 बालिकाओं ने रखा उपवास

आचार्य विशद सागर महाराज के सान्निध्य में मुनि-आर्यिका सहित संघ के साधुओं ने उपवास रखा। उनके साथ करीब 23 बालिकाओं ने भी उपवास किया। समन्वयक महावीर सुरेंद्र जैन एडवोकेट ने बताया कि मोक्ष सप्तमी के अवसर पर कुंवारी बालिकाओं द्वारा उपवास रखने की परंपरा है। इस अवसर पर 5 से 16 वर्ष की आयु की 23 बालिकाओं ने उपवास रखा। संयोजक कैलाश चंद सौगानी एवं ओमप्रकाश कटारिया ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन मनाया जाता है।

पार्श्व भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर के नेमीसागर कॉलोनी स्थित श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में बुधवार को भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव और धूमधाम के साथ मनाया गया। श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन समाज समिति के अध्यक्ष जे.के. जैन कालाडेरा ने बताया कि जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथ ने श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सम्मेद शिखरजी पर्वत से मोक्ष पद प्राप्त किया था। मोक्ष कल्याणक के अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने भगवान पार्श्वनाथ को निर्वाण लड्डू अर्पित किया। इससे पूर्व श्रीजी का सामूहिक अभिषेक एवं 48 ऋद्धि मंत्रों के साथ शांतिधारा की गई। इसके बाद निर्वाण लड्डू अर्पित कर विधि-विधानपूर्वक पार्श्वनाथ विधान पूजन संपन्न किया गया। इस अवसर पर समाज के गणमान्य लोग एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय मित्र विकास-शिल्पा मेहता के पूज्य पिताजी

श्री पारस मल जी मेहता

(पुत्र स्व. श्री शोभालाल जी मेहता)

के आकस्मिक निधन पर

भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत:

पुष्पेश - सुरभि कांकरिया, अभिनव - निकिता चोपड़ा, नितिन - वंदना जैन, अमित - सरिता सुराणा, रॉबिन - निकिता कोठारी, पीयूष - दीपिका नौलखा, रवि - रिया चोपड़ा, शशांक - सोनल सिंघवी, अविनाश - रितिका श्रीमाल ऋषभ - भाविका गोदिका एवं विनोद - रवीना छाबड़ा

श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय मित्र विकास-शिल्पा मेहता के पूज्य पिताजी

श्री पारस मल जी मेहता

(पुत्र स्व. श्री शोभालाल जी मेहता)

निवासी मंगरोप

के आकस्मिक निधन पर

भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

श्रद्धावनत:

आशीष - रूचिका सुराणा, यश - निभा बोथरा, मोहित - श्रद्धा मुनोत, तरुण - सुरभि बैद, सुमित - रूमा ढड्ढा, राहुल -शिखा जैन, अर्पित - नेहा जैन विनय - निहारिका श्रीमाल, अमित - शिल्पा पाटनी एवं नवीन - अनुभा पाटनी